विमर्श मञ्जरी

आदर्श महाकवि, भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर

सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर महाराज

विमर्श मञ्जरी

प्रथम शान्ति भक्ति सिद्धि दिवस
के पावन प्रसंग पर

प्रकाशक
राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला : हिन्दी ग्रन्थांक-12(12)

विमर्श मञ्जरी

प्रथम संस्करण 2017

नमनकर्ता

गुलाब चन्द, संजीव कुमार, राजीव कुमार, प्रदीप, कार्तिक, शुभ

(समस्त बजाज परिवार) विवाह फैशन, कुमकुम साड़ी, टीकमगढ़ (म.प्र.) मोबाईल : 9630928747

मुद्रक : अरिहंत ग्रॉफिक्स, दिल्ली

दूरभाष : 011-65002127, 9958819046

© राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच

विषय वीथिका

विमस्स–अट्ठगं	डॉ. उदयचन्द्र जैन कृत)	1
हे गुरुदेव हिरदय में पधराइएगा	आर्यिका विमलांत श्री माताजी	4
शांति भक्ति का चमत्कार देख रोमांचित हूँ	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	6
श्री शान्ति भक्ति	आचार्य पूदपाद स्वामी कृत	10
श्री सुप्रभात स्तोत्र	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	16
श्री महावीराष्टक स्तोत्र	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	20
श्री शान्तिनाथ जिन पूजा	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	23
श्री शांतिनाथ भगवान की आरती	–	31
श्री शांतिनाथ चालीसा	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	32
श्री शांतिनाथ कीर्तिन	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	38
श्री 1008 पद्मप्रभ जिनेन्द्र पूजन	श्रमणश्री विचिन्त्यसागर	40
आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की पूजन	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	48
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी पूजन	श्रमणश्री विचिन्त्यसागर	54
सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी का अर्घ	–	63

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी पूजन	श्रमणश्री विचिन्त्यसागर	64
श्री विमर्शसागर जी महाराज की बुंदेली पूजन	पं. संकेत जैन 'विवेक'	72
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी की आरती	–	81
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर चालीसा	श्रमणश्री विचिन्त्यसागर	83
पंच परमेष्ठी आरती	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	88
आचार्य वंदना	–	90
लघु प्रतिक्रमण	–	97
जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	101
कर तू प्रभु का ध्यान	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	103
ऋण मुक्ति का वर दीजिये	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	105
एक सुखद अनुभूतियों का एहसास–माँ	श्रमणाचार्य विमर्शसागर	107
परिचय–श्रमणाचार्य विमर्शसागर	श्रमणश्री विचिन्त्यसागर	109
गुरुदेव से संबंधित अन्य साहित्य	–	118

विमस्स–अट्ठगं

(डॉ. उदयचन्द्र जैन कृत)

बधं पबंभ–अदि–णंद–विराग–मुत्तिं
तित्थेस–णायग–जिणं सयलं च तित्थं।
तच्चं अणंत–सुविस्स–विमस्स–णंदं
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।१।।

अप्पं विसुद्ध–परिणाम–विमस्स–णीरं।
णीरेज्ज जीवण–जलं बहुमुल्ल–खीरं।
चक्खेदि सच्छ–परमप्प–रसं च णिच्चं।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।२।।

सारं च सार–समयं समयं च सारं
पत्तेज्ज सो णियमसार–पहुत्त–धीरं।

णिम्मल्ल–मल्ल–मदिमल्ल–सुदं च सुत्तं।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स सूरिं।।३।।

रम्माहिरम्म–कवि–कम्म–पहाण–कव्वं।
गीएज्ज गीद–जण–खेत्त–सु–विज्ज–विज्जे।
मज्झप्पदेस–अणुसिक्खण–साल–साले
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।४।।

आयार–पूद–सुविराग–विराग–सूरिं
णाणं च दंसण–चरित्त–तवं च णीरं।
णेदूणणिच्च रमदे हु विमस्स–विमस्स–छंदं।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स सूरिं।।५।।

धुव्वो हु तारग–जतार–सुणंदणो सो।
सिप्पी इमो विविह–कब्ब कलंस–चंदो।

चारित्त–सम्मग–रही दु विमस्स–सीलो।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।६।।

संपुण्ण–सारद–बई सुद–आगमम्हि।
आरूढ़–हंस–समणाइरियो विमस्सो।
लिप्पिं सिजेदि लिवि–बंह–विमस्स–णामं
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।७।।

सामाण्ण–धम्म–अणुपालिद–भावलिंगी।
झाणे तवे समयसार समे णिमग्गो।
मग्गटपभावण–गुणी सुद-सेवि-साधुं।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।८।।

विमस्स–उदयो चंदो, विमस्से सम–संतए।
दंसेदि सावगाणं च, वाए वागेसरी–समे।।

हे गुरुदेव हिरदय में पधराइएगा

आर्यिका विमलांत श्री माताजी (संघस्थ)

हे गुरुदेव हिरदय में पधराइएगा
सुमन बन हूँ अर्पित, न ठुकराइएगा।। हे गुरुदेव...

गुरुभक्ति गंगा का लेकर सहारा,
भावों की वेदी को हमने सँवारा,
कि तारण तारण बन चले आइएगा
हृदय आइएगा, न फिर जाइएगा।। हे गुरुदेव...

हृदय के कमल पर बिठाया है तुमको
आतम में अपने समाया है तुमको
कि अपने ही जैसा बना लीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

भावों से भरकर के जिसने पुकारा
विपदा में आकर के दीना सहारा
भव भव में भक्ति का वर दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

गुरु तेरी महिमा को गाते रहेंगे,
चरणों में मस्तक झुकाते रहेंगे
कर्मों के बंधन छुड़ा दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

उपसर्ग जेता हे गुरुवर हमारे!
भक्तों के संकट पल में निवारे
कि श्रद्धा समर्पण से भर दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

जिनधर्म रक्षक भी तुमको पुकारे
अरिहंत स्वामी तुम्हीं हो हमारे
सेवा का अवसर सदा दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

शांतिप्रभु के कहलाते नंदन,
सारा जहाँ करता चरणों में वंदन,
कृपादृष्टि सेवक पे कर दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

है चरणों में इतनी सी विनती हमारी,
भक्ती में बीते उमरिया ये सारी,
कि अपने ही रंग में रंगा लीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा

शांति भक्ति का चमत्कार देख रोमांचित हूँ

–श्रमणाचार्य विमर्शसागर

संसारी जीव एक व्यापारी की तरह है, जो नित्य शुभ और अशुभ कर्म का संचय करता है, उनका फल भोगता है। अशुभ कर्म का फल दुःख है शुभ कर्म का फल सुख। मोक्षमार्ग शुभाशुभ कर्म से मुक्त अतीन्द्रिय सुख का साधन है। मोक्षमार्गी साधक प्रधानतया अतीन्द्रिय सुख के मार्ग का आश्रय करते हैं। कदाचित् शुभमार्ग का आश्रय कर अशुभ कर्म की शान्ति का उपाय भी करते हैं, जिनधर्म की प्रभावना करते हैं। जैसे ४८ कोठरी में बंद आचार्य मानतुंग स्वामी ने आदिनाथ स्तुति की और ताले स्वयमेव खुल गये। आचार्य वादिराज स्वामी ने जिनस्तुति की और कुष्ठरोग तत्काल ठीक हो गया। आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने शांति स्तुति की और नेत्र ज्योति तुरंत आ गई। कवि धनंजय ने आदि स्तुति की और पुत्र का विष तत्काल शांत हो गया, पुत्र मानो सोते से जाग गया, जिन धर्म की भी महाप्रभावना हुई।

सच २५.१२.२०१५ का दिन मैं कभी भूल नहीं सकता जब दोपहर सामायिक हेतु चतुर्दिक् कायोत्सर्ग कर मैं बैठने ही वाला था कि १५ दिन से अत्यंत अस्वस्थ आँचल दीदी को संघस्थ दीदीयाँ व्हील चेअर से आशीर्वाद हेतु लाईं। पैरालाइसिस

जैसी शिकायत होने से पैर–हाथ से तो असमर्थता थी ही, आज आँखों से दिखना एवं कानों से सुनना भी बंद हो गया था। अत्यन्त दयनीय हालत में दीदी को देखकर हृदय करुणा से द्रवति हो उठा। मन ही मन भगवान् शांतिनाथ का स्मरण कर प्रभु से बोला– 'हे नाथ ! २२ वर्षीय असाध्य रोग से पीड़ित आँचल दीदी की अस्वस्थता आँखों से देखी नहीं जाती। प्रसिद्ध डॉक्टर्स भी स्पष्ट मना कर चुके हैं कि दीदी अब कभी स्वस्थ नहीं हो सकती। हमारे मेडिकल साइंस में यह प्रथम केस है कि दीदी की रिपोर्ट नॉर्मल है और अस्वस्थता बढ़ती जा रही है। हे प्रभो ! अब तो एकमात्र आपकी भक्ति ही शरण है। सच्चा भक्त आपकी भक्ति के फल से जब पूर्ण निरामय अवस्था को प्राप्त कर सकता है, तो इस रोग से मुक्ति क्यों नहीं मिलेगी।' मैं अत्यंत करुणा से भरा हुआ आँचल दीदी से बोला– बेटा ! मैं तुम्हें शांतिभक्ति सुना रहा हूँ, मेरी आज की यही सामायिक है, मैं भगवान् शांतिनाथ को हृदयकमल पर विराजमान करके आचार्य भगवन् पूज्यपाद स्वामी का भक्ति से स्मरण कर, पूज्य आचार्य गुरुदेव विरागसागर जी का आशीष अनुभव कर अत्यंत तन्मयता के साथ शांति भक्ति का उच्चारण करने लगा। अपूर्व विशुद्धि अनुभव हो रही थी, रोम–रोम भक्ति रस में सराबोर था। तभी अचानक आँचल दीदी की आँखों में नेत्र ज्योति आ गई, कानों से स्पष्ट सुनाई देने लगा, मुख का टेढ़ापन दूर हो गया और निश्चल हाथ की अंगुलियाँ स्वयमेव खुल गईं, हाथ भी सहज चलने लगा। कमरे में जितने लोग थे,

सभी जय–जयकार करने लगे। शांति भक्ति का अतिशय देख सभी रोमांचित हो गये। आँचल दीदी बोलीं – गुरुदेव ! मेरा चेहरा पहले जैसा हो गया है। मैं पहले की तरह ही बोल रही हूँ न। मुझे पहले की तरह ही दिखाई एवं सुनाई भी दे रहा है। मैंने कहा–बेटा ! यह सब भगवान शांतिनाथ की कृपा है। आँचल दीदी बोलीं–गुरुदेव! अब तो मैं आहार का शोधन भी कर सकती हूँ, और हाथों से आहार दे भी सकती हूँ, तभी उनका ध्यान अपने संवेदना शून्य पैर पर गया, बोलीं, गुरुदेव ! यदि मेरा पैर भी ठीक हो जाता तो मैं आपको जल्दी आहार दे पाती। मैंने कहा–बेटा! भगवान शांतिनाथ की भक्ति से वह भी शीघ्र ठीक होगा। मैंने पुनः दीदी को शांतिभक्ति सुनाना शुरू किया, दीदी भी साथ पढ़ने लगीं। अहो! अद्भुत आनन्दरस बहने लगा प्रभु की भक्ति करते। तभी दीदी के पैर की अंगुलियाँ चलने लगीं और दीदी अपने पैरों पर खड़ी हो गईं। व्हील चेयर को पीछे धकेल दिया और कमरे में ही चलने लगीं। अभी शांतिभक्ति पूर्ण नहीं हुई थी, अतः मैंने कहा–बेटा! भक्ति कर लो। सभी ने भावपूर्वक शांति भक्तिपूर्ण की। आँचल दीदी बोलीं–गुरुदेव! ऐसा लग रहा है मानों सोकर उठी हूँ। गुरुदेव! मैं तो बिल्कुल ठीक हो गई। मैंने कहा–बेटा ! शांतिभक्ति के प्रसाद से तुम ठीक हुई हो। दीदी बोलीं–गुरुदेव सब आपकी ही कृपा है।

कमरे में दीदी के माता–पिता भी उपस्थित थे। यह भक्ति का चमत्कार देख उनकी आँखों से खुशी के आँसू ढुलक रहे थे। मैंने कहा–अब सभी लोग भगवान

शांतिनाथ के पास चलेंगे। एक बार वहाँ भी शांतिभक्ति का पाठ करेंगे। दीदी ने कहा–अब मैं व्हील चेअर से नहीं, पैदल ही चलूँगी। अहो! दीदी को पैदल चलते देख उपस्थित सैकड़ों भक्त जन आश्चर्य करने लगे। हमने शांति जिनालय में पुनः शांतिभक्ति का पाठ किया और भगवान शांतिनाथ के चरणों का भावपूर्वक स्पर्शकर आँचल दीदी को एवं संघस्थ सभी साधुओं को आशीर्वाद दिया फिर हम सभी प.पू. सूरिगच्छाचार्य गुरुदेव श्री विरागसागर जी के पास पहुँचे, वहाँ दीदी ने आचार्य वंदना की। पूज्य गुरुदेव ने मंगल आशीर्वाद दिया, और कहा–अहारजी में घटी यह अतिशयकारी घटना यहाँ चिरकाल तक गुंजायमान होती रहेगी।

सच, मैं बेहद रोमांचित और आनंदित हूँ। शांतिभक्ति का पाठ करते समय जो विशुद्धि और आनंद का अनुभव हुआ, वह शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। भक्ति का यह अतिशय–चमत्कार स्मृति पटल पर बार–बार आता ही रहता है। जिनेन्द्र भक्ति का माहात्म्य यही तो है–

विघ्नौघा प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।

अर्थात् जिनेश्वर की स्तुति करने पर विघ्नों का समूह तथा शाकिनी, भूत, सर्प आदि की बाधाएँ क्षण भर में क्षय को प्राप्त हो जाती हैं और विष भी निर्विषता को प्राप्त होता है।

यही वो महान् अतिशयकारी शान्ति भक्ति है जो सिद्धक्षेत्र अहारजी में पूज्य गुरुदेव श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी को अपनी निर्मल–साधना के द्वारा, जो पंचमकाल में दुर्लभतम है, सहज सिद्ध हुई थी और यक्षों द्वारा की गई थी महापूजा तथा नाम दिया गया था 'भावलिंगी संत' एवं 'अहारजी के छोटे बाबा'

श्री शान्ति भक्ति

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्! पादद्वयं ते प्रजाः,
हेतु स्तत्र विचित्र दुःख निचयः संसार घोरार्णवः।
अत्यन्त स्फुर दुग्र रश्मि निकर व्याकीर्ण भूमण्डलो,
ग्रैष्मः कारयतीन्दु पाद सलिल–च्छायानुरागं रविः।।१।।

(प्रणाम करने का ऐहिक फल)

क्रुद्धाशीर्विष दष्ट दुर्जय विष ज्वालावली विक्रमो,
विद्या भेषज मन्त्र तोय हवनै-र्याति प्रशान्तिं यथा।
तद् वत्ते चरणारुणाम्बुज युग-स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्,
विघ्नाःकायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः।।२।।

(प्रणाम करने का फल)

सन्तप्तोत्तम कांचन क्षितिधर श्री स्पर्द्धि गौरद्युते,
पुंसां त्वच्चरणप्रणाम करणात्पीडाः प्रयान्तिक्षयं।
उद्यद्भास्कर विस्फुरत्कर शतव्याघात निष्कासिता,
नाना देहि विलोचन–द्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी।।३।।

(मुक्ति का कारण जिन स्तुति)

त्रैलोक्येश्वर भंग लब्ध विजयादत्यन्त रौद्रात्मकान्,
नाना जन्म शतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्र दावानलान्,
न स्याच्चेत्तव पाद–पद्म युगल स्तुत्यापगा वारणम्।।४।।

(स्तुति से असाध्य रोगों का नाश)

लोकालोक निरन्तर प्रवितत् ज्ञानैक मूर्त्ते विभो,
नाना रत्न पिनद्ध दण्ड रुचिर श्वेतातपत्रत्रय।
त्वत्पाद–द्वय पूत गीत रवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामया,
दर्पाध्मात–मृगेन्द्रभीम निनदाद् वन्या यथा कुञ्जराः।।५।।

(स्तुति से अनन्त सुख)

दिव्य स्त्री नयनाभिराम विपुल श्री मेरु चूडामणे,
भास्वद् बाल दिवाकर–द्युतिहर प्राणीष्ट भामण्डल।
अव्याबाध मचिन्त्यसार मतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतम्,
सौख्यं त्वच्चरणारविन्द युगल स्तुत्यैव सम्प्राप्यते।।६।।

(भगवान् के चरण–कमल प्रसाद से पापों का नाश)

यावन्नोदयते प्रभा परिकरः श्रीभास्करो भासयंस्,
तावद् धारयतीह पंकज वनं निद्रातिभार श्रमम्।
यावत्त्वच्चरण द्वयस्य भगवन्! न स्यात् प्रसादोदयस्–
तावज्जीव निकाय एष वहति प्रायेण पापं महत्।।७।।

(स्तुति फल याचना)

शान्तिं शान्ति जिनेन्द्र शान्त मनसस्त्वत्पाद पद्माश्रयात्,
संप्राप्ताः पृथिवी तलेषु बहवःशान्त्यर्थिनः प्राणिनः।
कारुण्यान् मम भक्तिकस्य च विभो! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु,
त्वत्पादद्वय दैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः।।८।।

शान्ति जिनं शशि निर्मल वक्त्रं, शीलगुण व्रत संयम पात्रम्।
अष्टशतार्चित लक्षण गात्रं, नौमि जिनोत्तम मम्बुज नेत्रम्।।९।।
पञ्चम मीप्सित–चक्रधराणां, पूजित मिन्द्र–नरेन्द्र–गणैश्च। शान्तिकरं
गण – शान्ति – मभीप्सुः,षोडश – तीर्थकरं–प्रणमामि।।१०।।
दिव्यतरूः सुर – पुष्प – सुवृष्टि – र्दुन्दुभिरासन–योजन घोषौ।
आतप–वारण–चामर–युग्मे, यस्य विभाति च मण्डलतेजः।।११।।
तं जगदर्चित – शान्ति – जिनेन्द्रं, शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्व गणाय तु यच्छतु शान्तिं, मह्यमरं पठते परमां च।।१२।।
येऽभ्यर्चिता मुकुट–कुण्डल–हार–रत्नैः, शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुत–पादपद्माः।
ते मे जिनाः प्रवर–वंश–जगत्प्रदीपाः, तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु।।१३।।
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र – सामान्य – तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान्–जिनेन्द्रः।।१४।।
क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग् वितरतु मघवा, व्याधयो यान्तु नाशम्।

दुर्भिक्षं चौरमारिः क्षणमपि जगतां, मास्मभूज्जीव–लोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं, सर्व–सौख्य–प्रदायि।।१५।।
तद् द्रव्यमव्ययमुदेतु शुभः स देशः, संतन्यतां प्रतपतां सततं सकालः।
भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण, रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षुवर्गे।।१६।।
प्रध्वस्त घाति कर्माणः, केवलज्ञान भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं, वृषभाद्या जिनेश्वराः।।१७।।

(क्षेपक श्लोकानिः)

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां,
शान्तिः निरन्तर तपोभव भावितानां।
शान्तिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां,
शान्तिः स्वभाव महिमानमुपागतानाम्।।१।।
जीवन्तु संयम सुधारस पान तृप्ता,
नंदंतु शुद्ध सहसोदय सुप्रसन्नाः।
सिद्धयंतु सिद्धि सुख संग कृताभियोगाः,

तीव्रं तपन्तु जगतां त्रितयेऽर्हदाज्ञा।।२।।
शान्तिः शं तनुतां समस्त जगतः संगच्छतां धार्मिकैः,
श्रेयः श्री परिवर्धतां नयधरा, धुर्यो धरित्री पतिः।
सद्विद्या–रसमुद्गिरन्तु कवयो, नामाप्य धस्यास्तु मां,
प्रार्थ्यं वा कियदेक एव, शिवकृद्धर्मो जयत्वर्हताम्।।३।।

इच्छामि भंते ! संतिभक्ति–काउसग्गो कओ, तस्सालोचेउं, पञ्च - महा - कल्लाण - संपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेर - साहियाणं, चउतीसातिसय - विसेस संजुत्ताणं, बत्तीस-देवेंद-मणिमय मउड मत्थय महियाणं बलदेव वासुदेव चक्कहर रिसि-मुणि-जदि-अणगारोव गूढाणं, थुइ सय - सहस्स - णिलयाणं, उसहाइ - वीर - पच्छिम - मंगलमहापुरिसाणं सया णिच्चकालं, अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहि-मरणं जिण - गुण सम्पत्ति होउ मज्झं।

(इति श्री शांतिभक्ति)

श्री सुप्रभात स्तोत्र

(पद्यानुवाद-आदर्श महाकवि श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज)

हे जिनेन्द्र! स्वर्गावतरण-तव, हुआ जन्म अभिषेकोत्सव,
दीक्षाग्रहण समय उत्सव जो, केवलज्ञान प्रभा उत्सव।
गायन संग हुई जो पूजा, संस्तुतियाँ निर्वाणोत्सव,
उसी तरह हो मंगलकारी, मेरा सुप्रभात उत्सव॥1॥

देवगणों के मुकुट जहाँ पर, नत होते हों आनंदित,
खचित महामणि आभाओं से, चरण युगल हैं स्पर्शित।
कर्म विजेता हे नाभि सुत! अजितनाथ! संभव भगवान् !
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान॥2॥

तीन छत्र मस्तक पर शोभित, ढुरते हुये चँवर गतिमान,
हे देवाधिदेव अभिनंदन-मुनि! हे सुमतिनाथ भगवान्!।
हे पद्मप्रभु जिन! तव तन द्युति, पद्मराग मणि प्रभा समान,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान॥3॥

कदलीदल सम देहवर्ण शुभ, हे सुपार्श्व! अर्हन भगवान्,
रजतगिरि हिमगिरि सित मुक्ता-सम हे चंदप्रभु भगवान्।
पुष्पदंतजिन! धवल विमल शुचि, शुद्ध स्फटिकमणी समान।
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान॥4॥

हे शीतल जिन! शोभित तव तन, तपे स्वर्ण की कांति समान,
पापरूप वसुकर्म पंकमल-नाशे हे श्रेयांश भगवान्!
लाल-लाल बंधूक पुष्प सम, तव तन वासुपूज्य भगवान्!
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान॥5॥

उद्धत कामबली जेता हे विमल! अमल तनधारी आप,
हे अनंत जिन! नंत सुखार्णव, महाधैर्य का प्रखर प्रताप।
दुर्धर कर्म कलुष से विरहित, धर्मनाथ जिनवर भगवान्,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान॥6॥

शांतिनाथ हे शांति प्रदाता, शोभित अमरी पुष्प समान,
कुन्थुनाथ जिन! अहा विभूषित दयारूप निजगुण सुखखान।

तीर्थनाथ देवाधिदेव तारो हे अरहनाथ भगवान्।
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान॥7॥

मोहमल्ल के मदभंजक हे मदन विजेता मल्लिनाथ,
शिवकारी सत्शासनधारी ऐसे हे मुनिसुव्रतनाथ।
परमशांतमय सत्य संपदा धारक नमिनाथ भगवान्,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान॥8॥

उज्ज्वल कांति तमाल वृक्ष सम शोभित नेमिनाथ भगवान्,
जीत लिये उपसर्ग भयंकर, क्षमामूर्ति हे पार्श्व महान।
स्याद्वाद सिद्धान्तमणी को वर्द्धमान आदर्श समान,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान॥9॥

श्वेत, नील अरु हरित, लाल वा पीतवर्ण से शोभित तन,
जो अविनाशी शिवसुखवासी जिनका ध्यान करें मुनिजन।
ढाई द्वीप के तीर्थ प्रर्वतक, सत्तर एक शतक भगवान्,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान॥10॥

तीर्थङ्कर चौबीस का, प्रतिदिन प्रातः ध्यान।
सुप्रभात नक्षत्र शुभ, मंगल कहा महान॥11॥

देव सिद्ध मुनिसंघ का, प्रतिदिन प्रातः ध्यान।
सुप्रभात नक्षत्र शुभ, श्रेय रूप सुखखान॥12॥

किया प्रवर्तन तीर्थ का, भविजन को सुखथान।
उन महान वृषभेष का प्रातः उत्तम ध्यान॥13॥

नित्योदित रवि ज्ञान से, मिटा तिमिर अज्ञान।
अहा! खुले नयनांध कर सुप्रभात जिन ध्यान॥14॥

किया कर्मवन दग्ध पा-तैजस शुक्लध्यान।
कमल नयन जिन वीर का, सुप्रभात शुभध्यान॥15॥

है जिनेन्द्र शासन अहा! तीन लोक हितभूप।
सुप्रभात नक्षत्र शुभ, शिवं सुमंगल रूप॥16॥

(इतिश्री सुप्रभात स्तोत्र)

श्री महावीराष्टक स्तोत्र

(पद्यानुवाद-आदर्श महाकवि श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज)

व्यय-उत्पाद-ध्रौव्यमय सब ही भाव चराचर अन्तरहित,
दर्पण सम चैतन्यज्ञान में होते युगपत् प्रतिबिम्बित।
जगप्रत्यक्षी मोक्षमार्ग को प्रगट कर रहे सूर्य समान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्॥1॥

दोनों नयन कमल जिनके निस्पंद लालिमाहीन अहा!,
अंतर-बाहर क्रोध न कणभर जन-जन को यह प्रगट किया।
परमशान्तिमय मूरत जिनकी है अति-निर्मल आभावान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्॥2॥

वन्दन करते देवगणों के मुकुटमणि झिलमिल-झिलमिल,
आभा से हो उठे सुशोभित, कांतिमान तव चरण-कमल।

भवज्वाला के शमन हेतु जग-जन को जल-सम जिनका ध्यान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्॥3॥

जब अर्चा के भाव संजो शुभ प्रमुदितमन मेंढक इह-लोक,
अणिमा-महिमा गुण युत सुखनिधि, पा सकता क्षण में दिविलोक।
तब सद्भक्त मोक्षसुख पावें इसमें क्या आश्चर्य महान्?
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्॥4॥

स्वर्णाभा सी दीप्ति देह फिर भी विदेह हे ज्ञान निकर,
आत्मनैक पर एक जन्मगत हो सुत सिद्धारथ नृपवर।
कहलाते भव-राग-विगत प्रभु हो, बहिरंग लक्ष्मीवान्,
मेरे लिए नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्॥5॥

जिनके शुभ वचनों की गंगा नाना नय कल्लोल विमल,
विपुलज्ञान जल से जग जन का जो करती अभिषेक अमल।
परिचित है बुधजन हंसों से संप्रति में यह गंग महान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्॥6॥

मदन महाभट चंडवेग युत् दुर्निवार त्रयलोकजयी,
निजबल से कौमार-दशा में जीता हुये काम-विजयी।
नित्यानन्द-स्वभावी शिवपद राज प्राप्ति का ध्येय महान,
मेरे लिए नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्॥7॥

मोह रोग प्रशमन करने हो वैद्य अकारण नित तत्पर,
हे निरपेक्ष! परम बन्धु! हे विदित महिम! हे मंगलकर!
भवभीरु साधकजन को शुभ शरण आप उत्तम गुणवान्,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्॥8॥

महावीर भगवान् का आठपद्य गुणगान,
पढ़े सुने जो भाव से वह पाता शिवथान।
''भागचन्द्र'' द्वारा रचित भक्ति भाव प्रधान,
है ''विमर्श'' अंतिम यही मिट जाये अज्ञान॥9॥

(इति श्री महावीराष्टक स्तोत्र)

श्री शान्तिनाथ जिन पूजा

(रचयिता-आदर्श महाकवि श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज)

अनुपम शिवशांति प्रदायक प्रभु, हे 'शांतिनाथ'! दो शांति हमें।
चैतन्य जलधि में वास करुँ, दे दो सम्यक् विश्रान्ति हमें॥
चक्री तीर्थंकर कामदेव, त्रयपद के धारी कहलाते।
प्रभु! मुझको पद की चाह नहीं, हम तो पद रज पाने आते॥
हे नाथ! आपकी पद-रज से, रत्नत्रय पद को पाऊँगा।
आह्वानन् स्थापन सन्निधि करके, प्रभु हृदय बुलाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

शुचिज्ञान जलधि से जल भरकर, लाया हूँ नाथ चढ़ाने को।
दुःखदायक जन्म-जरा-मृत्यु, अपने त्रय रोग मिटाने को॥

हे शांतिनाथ! दुःख के हर्ता, अब मेरा भवदुःख हरण करो।
मैं शुद्धातम में रमण करुँ, हे नाथ! समाधिमरण वरो॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादिक सर्व विभाव भाव, कहलाते हैं भव ताप प्रभो!।
अर्पित चरणों शीतल चन्दन, मेंटो अब भव संताप विभो॥
हे शांतिनाथ!... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

पद की ममता में फँसकर प्रभु! शुद्धातम पद खोता आया।
अक्षय पद की अब चाह मुझे, अक्षत मोती सम भर लाया॥
हे शांतिनाथ!... ॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ब्रह्मचर्य की शक्ति से, प्रभु तुमने काम नशाया है।
पुष्पांजलि अर्पित करने को, यह भक्त शरण में आया है॥
हे शांतिनाथ!... ॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना की तृष्णा के कारण, अणु-अणु को ग्रास बना डाला।
नहिं क्षुधा वेदना हुई शमन, मानो पावक में घी डाला॥
हे शांतिनाथ!... ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार में भटक-भटक, चारों गति में भरमाया हूँ।
अज्ञान मोह का नाश करुँ, मैं जगमग दीपक लाया हूँ॥
हे शांतिनाथ!... ॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

काषायिक भाव रहित ऐसी, स्वाभाविक अग्नि जलाई है।
कर्माष्ट धूप खेकर तुमने, त्रिभुवन में गंध उड़ाई है॥
हे शांतिनाथ!... ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे फल निष्फल हुये प्रभो! अब शिवफल की है चाह मुझे।
उत्तम-उत्तम भावों के फल, भावों से अर्पित करुँ तुझे॥
हे शांतिनाथ!... ॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्य मिला, शुभ अर्घ्य लिये गुणगान करुँ।
पाऊँ अनर्घ्य पद हे स्वामिन्!, अर्पित कर तेरा ध्यान करुँ॥
हे शांतिनाथ!... ॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चकल्याणक

भादों श्यामा सप्तमि को, सर्वार्थ त्याग गजपुर को।
माँ ऐरा गर्भ समाये, हम पूजैं ध्यान लगाये॥1॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्णा सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्मे त्रिभुवन सुखदाई, वदि जेठ चतुर्दशि आई।
इन्द्रों ने जोड़े हाथा, हम चरण झुकायें माथा॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

थी जेठ चतुर्दशि काली, शुद्धात्म ध्यान खुशहाली।
वन में तपयोग सम्हारा, हम पूजैं सौख्य अपारा॥3॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां तप कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दिन पौष शुक्ल दसमी का, उद्योत ज्ञान रश्मि का।
प्रभु घाती कर्म नशाया, सुर नर किन्नर यश गाया॥4॥

ॐ ह्रीं पौष शुक्ला दशम्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

थी जेठ चतुर्दशि कारी, सम्मेद गिरी सुखकारी।
प्रभु कर्म अघाति नशाये, मुक्ती पद तत्क्षण पाये॥5॥

ॐ ह्री ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

(तर्ज-हे दीन बन्धु...)

हे शांतिदाता शांतिनाथ जय हो तुम्हारी।
भव्यों के त्राता शांतिनाथ जय हो तुम्हारी॥
करुणा निधान शांतिनाथ जय हो तुम्हारी।
त्रिभुवन की शान शांतिनाथ जय हो तुम्हारी॥
आदित्यगति मुनि को जब आहार दिया था।
आहारदान में प्रसिद्ध नाम किया था॥
श्री षेण की पर्याय को तुमने सफल किया।
स्वामिन्! असाता कर्म को तुमने विफल किया॥
तुम विश्वसेन पिता, माँ ऐरा की शान हो।
सोलहवें तीर्थेश हो, जग में महान हो॥

बारहवें कामदेव कहाते हो आप ही।
चक्री हो पाँचवे, है पुण्य का प्रताप ही॥
होकर के कामदेव तुमने काम को मारा।
छह खण्ड भोग करके भी निज ब्रह्म निहारा॥
तीर्थंकरों में तीन पद धारी प्रथम हुये।
सम्यक्त्व बल से भाव सहज ही प्रशम हुये॥
आया विरागभाव फिर किसी की न सुनी।
ममता को त्याग करके बन गये महामुनि॥
चिद्रूप साधना का फल दिखाया आपने।
जब पूर्ण ज्ञान को सहज ही पाया आपने॥
भव सिन्धु में पतित हुऐ जीवों को बचाया।
जब धर्मदेशना में मोक्ष मार्ग बताया॥
ध्याया जो शुक्लध्यान अघाति को नशाया॥

सम्मेद शैल से प्रभु! निर्वाण को पाया॥
आनन्दकन्द आत्मा के आप हो धनी।
चैतन्यरस की हो रही वर्षा घनी-घनी॥
हे नाथ! अपने जैसा आत्मध्यान दीजिये।
आया हूँ शरण आपकी कल्याण कीजिये॥

दोहा

हर्ष भाव से ही किया, जयमाला गुणगान।
है 'विमर्श' चरणों यही, पाऊँ प्रभु निर्वाण॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ तुमको नमूँ, धर चरणों में शीष।
शांति करो मम हृदय में, करुणासिंधु ऋषीश॥

(परिपुष्पांजलि क्षिपामि)

श्री शांतिनाथ भगवान की आरती

शांति अपरंपार है आनंद अपार है
शांतिनाथ भगवान की आरती बारंबार है।

पहली आरती पहले पद की, तीर्थंकर पद धारी की -२
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, छियालीस गुण धारी की-२
शांति अपरंपार .....।

दूजी आरती दूजे पद की, चक्रवर्ती पद धारी की-२
चौदह रत्न नवोनिधि छोड़े, चौरासी लख हाथी की-२
शांति अपरंपार .....।

तीजी आरती तीजे पद की, कामदेव पद धारी की-२
सहज छियानवे रानी तजकर, हुये दिगम्बर धारी की-२
शांति अपरंपार .....।

कर्म काट सम्मेद शिखर से, मुक्ति कंत पदधारी की-२
आप तिरे अनगिनत को तारे, हमको क्यों ना तारो जी-२
शांति अपरंपार है, आनंद अपार है
शांतिनाथ भगवान की आरती बारंबार है।

श्री शांतिनाथ चालीसा

(दोहा)

शांतिनाथ महाराज का, चालीसा सुखकार।
मोक्ष प्राप्ति के लिए, कहूँ सुनो चित्त धार।।
चालीसा चालीस दिन तक, कह चालीसहिं बार।
बढ़े जगत सम्पत, सुमत, अनुपम शुद्ध विचार।।

(चौपाई)

शांतिनाथ तुम शांतिनायक, पंचम चक्री जग सुखदायक।
तुम्हीं सोलहवें हो तीर्थंकर, पूजें देव भूप सुर गणधर।
पंचाचार गुणों के धारी, कर्म रहित आठों गुणकारी।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, निज गुण ज्ञान भानु प्रकटाया।

स्याद्वाद विज्ञान उचारा, आप तिरे औरन को तारा।
ऐसे जिन को नमस्कार कर, चढ़ूँ सुमति शांति नौका पर।
सूक्ष्म सी कुछ गाथा गाता, हस्तिनापुर जग विख्याता।
विश्वसेन पितु ऐरा माता, सुर तिहूँ काल रत्न वर्षाता।
साढ़े दस करोड़ नित गिरते, ऐरा माँ के आंगन भरते।
पन्द्रह माह तक हुई लुटाई, ले गये भर-भर लोग लुगाई।
भादों बदि सप्तमि गर्भाते, उत्तम सोलह सपने आते।
सुर चारों निकाय के आये, नाटक गायन नृत्य दिखायें।
सेवा में जो रहीं देवियाँ, रखतीं खुश माँ को दिन रतियाँ।
जन्म जेठ वदी चौदश के दिन, घंटे अनहद बजे गगन घन।
तीनों ज्ञान लोक सुखदाता, मंगल सकल हर्ष गुण लाता।
इन्द्र देव सब सेवा करते, विद्या कला ज्ञान गुण बढ़ते।

अंग अंग सुन्दर मनमोहन, रत्न जड़ित तन वस्त्राभूषण।
बल विक्रम यश वैभव काजा, जीते छहों खण्ड के राजा।
न्यायवान दानी उपकारी, परजा हर्षित निर्भय सारी।
दीन अनाथ दुःखी नहीं कोई, होती उत्तम वस्तु वोई।
ऊँचे आप अस्सी गज के थे, वदन स्वर्ण अरू चिन्ह हिरण थे।
शक्ति ऐसी थी जिन स्वामी, वरी हजार छियानवें रानी।
लख चौरासी हाथी रथ थे, घोड़े करोड़ अठारह शुभ थे।
सहस पचास भूप के राजन, अरबों सेवा में सेवक जन।
तीन करोड़ थी सुन्दर गईयाँ, इच्छा पूर्ण करे नौ निधियाँ।
चौदह रत्न व चक्र सुदर्शन, उत्तम भोग वस्तुएँ अनगिन।
थी अड़तालीस करोड़ ध्वजाऐं, कुण्डल चन्द्र सूर्य सम छाये।
अमृत गर्भ नाम का भोजन, लाजवाब ऊँचा सिंहासन।

लाखों मन्दिर भवन सुसज्जित, नार सहित तुम जिनमें शोभित।
जितना सुख था शांतिनाथ को, अनुभव होता ज्ञानवान को।
चले जीव जो त्याग धर्म पर, मिलें ठाठ उनको ये सुखकर।
पच्चीस सहस वर्ष सुख पाकर, उमड़ा त्याग हितकर तुम पर।
जग तुमने क्षण भंगुर जाना, वैभव सब सुपने सम माना।
ज्ञानोदय जो हुआ तुम्हारा, पाये शिवपुर तज संसारा।
कामी मनुज काम को त्यागें, पापी पाप कर्म से भागें।
सुत नारायण तख्त बिठाया, तिलक चढ़ा अभिषेक कराया।
नाथ आपको बिठा पालकी, देव चले ले राह गगन की।
इत उत इन्द्र चँवर ढुरावें, मंगल गाते वन पहुँचावे।
भेष दिगम्बर अपना कीना, केश लोंच पंच मुष्टी कीना।
पूर्ण हुआ उपवास छठा जब, शुद्धाहार चले लेने तब।

कर तीनों वैराग चिन्तवन, चारों ज्ञान किये सम्पादन।
चार हाथ मग लखते चलते, षटकायिक की रक्षा करते।
मनहर मीठे वचन उचरते, प्राणीमात्र का दुःखड़ा हरते।
नाशवान काया यह प्यारी, इससे ही यह रिश्तेदारी।
इससे मात पिता सुतनारी, इसके कारण फिरे दुःखारी।
गर यह तन ही प्यारा लगता, तरह-तरह का रहेगा मिलता।
तजे नेह काया माया का, हो भरतार मोक्ष दारा का।
विषय भोग सब दुःख के कारण, त्याग धर्म ही शिव के साधन।
निधि लक्ष्मी जो कोई त्यागे, लक्ष्मी पीछे पीछे भागे।
प्रेम रूप जो इसे बुलावे, उसके पास कभी नहीं आवे।
करने को जग का निस्तारा, छहों खण्ड का राज विसारा।
देवी देव सुरासुर आये, उत्सव तप कल्याण मनाये।

पूजन नृत्य करें नत मस्तक, गाई महिमा प्रेम पूर्वक।
करते तुम आहार जहाँ पर, देव रतन वर्षाते उस घर।
जिस घर दान पात्र को मिलता, घर वह नित्य फूलता फलता।
आठों गुण सिद्धों के ध्याकर, दशों धर्म चित काय तपाकर।
केवल ज्ञान आपने पाया, लाखों को हैं पार लगाया।
समवशरण में ध्वनि खिराई, प्राणी मात्र के समझ में आई।
समवशरण प्रभु का जहाँ जाता, कोस चार सौ तक सुखपाता।
फूल फलादिक मेवा आती, हरी भरी खेती लहराती।
सेवा में छत्तीस थे गणधर, महिमा मुझसे क्या हो वर्णन।
नकुल सर्प मृग हरि से प्राणी, प्रेम सहित मिल पीते पानी।
आप चतुर्मुख विराजमान थे, मोक्ष मार्ग को दिव्यवान थे।
करते आप विहार गगन में, अन्तरिक्ष थे समवशरण में।

श्री शांतिनाथ कीर्तिन

रचियता : आदर्श महाकवि श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, भगवन्-२
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, शान्ति भगवन्।

हम आये हैं-द्वार तुम्हारे-२,
दे दो प्रभु जी, हमको सहारे-२
शान्तिनाथ भगवन्-भगवन्-भगवन्ऽऽ
जय हो.....

छवि वीतरागी-प्यारी प्यारी लागे-२
दरश जो पाया-धन्य भाग जागे-२
चरणों करुँ नमन-नमन-नमनऽऽ
जय हो.....

सर्वज्ञ स्वामी-शरण में आया-२,

कहीं न मिला जो-वह सुख पाया-२
हर्षित हुए नयन-नयन-नयनऽऽ

जय हो.....

हित उपदेशी-आप कहाते-२
हम गुण गाने - भक्त बन जाते-२
छोड़ूँ न अब चरण-चरण-चरणऽऽ

जय हो.....

अहार जी के-बाबा कहाते-२
यक्ष यक्षिणी भी-सिर को नवाते-२
झुकते हैं मुनिगण-मुनिगण-मुनिगणऽऽ

जय हो.....

दुखिया हो कोई-द्वार पे आये-२
हँसता हुआ ही-द्वार से जाये-२
श्रद्धा हो पावन-पावन-पावनऽऽ

जय हो.....

ऐरावत क्षेत्र से निर्वाण को प्राप्त होने वाले भावी केवली

श्री १००८ पद्मप्रभ जिनेन्द्र पूजन

रचियता : श्रमण श्री विचिन्त्य सागर मुनि

।। स्थापना ।।

मैंने मन मंदिर में सुंदर इक वेदी भव्य बनाई है।
श्रद्धा के स्वर्णिम रंगों से वह वेदी खूब सजाई है।
अब प्रतिष्ठेय इस वेदी पर हे पद्मप्रभ ! केवलि आओ
चिर काल हेतु इस वेदी पर हे नाथ ! प्रतिष्ठित हो जाओ।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट।
ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

।। जल ।।

निज शास्वत चेतन प्राण अहा, उसकी श्रद्धा बिन भ्रमण किया ।
चारों ही गतियों में अब तक बस जन्म लिया और मरण किया।।
हे अविनाशी आतम वासी हमको भी पद अविनाश वरो।
ये प्रासुक शीतल, निर्मल जल अर्पित है भवदुख नाश करो ।।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

।। चंदन ।।

पर में उपयोग लगाते ही वर्धित भवताप सताता है
पर में ही राग द्वेष करके यह जीव महा दुख पाता है।
निज उपयोगी बनकर तुमने भव भव का ताप मिटा डाला
चंदन से अर्चा करता हूँ, मिट जायें भव भव की ज्वाला।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अक्षत ।।

पग पग पर पद की इच्छायें अंतस को नित्य जलाती हैं
नाना सुंदर सुंदर रूपों में आकर मुझे लुभाती हैं।
अक्षय अविनाशी निज ध्रुव पद जो भगवन् तुमने पाया है।
उस निज ध्रुव की उपलब्धि में अक्षत अबलम्ब बनाया है।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

।। पुष्प ।।

कमनीय कामनी का दामन हर भव में हमको इष्ट लगा।
निज ब्रह्म की चर्चा चर्या व अनुमोदन हमें अनिष्ट लगा।
वह परम ब्रह्म का वेदन था जो काम भी तुमसे हार गया।
अब्रह्म विजेता बनने को, अर्पित ये पुष्पाहार नया।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

।। नैवेध ।।

बल है अनंत लेकिन निर्बल होकर भव भव दुख पाया है
इस क्षुधा वेदनी ने हमको पुद्गल का दास बनाया है।
चेतन रस का कर पान प्रभु तुमने ये क्षुधा मिटा डाली।
मैं भी क्षुधान्त कर सकूँ, अतः लाया ये व्यञ्जन की थाली।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। दीप ।।

चैतन्य दीप से आलौकित आतम प्रदेश की हर क्यारी।
पर मोहनीय विधि के कारण फैली पर्याय में अधियारी।
हे देव ! आपने आतम में कैवल्य सूर्य प्रगटाया है।
मैं भी निर्मोह बनूँ भगवन् ! ये जगमग दीप जलाया है।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ धूप ॥

शुभ अशुभ भाव की परिणतियाँ भव की संतति बड़ाती हैं।
जिसके कारण आतम चारों ही गतियों में दुख पाती है।
शुभ अशुभ भाव को नश प्रभुजी!, पंचम गति में जा वास किया।
मैने भी धूप चढा तुमसा बनने का नाथ ! प्रयास किया।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ फल ॥

कर्मोदय के सुख दुख फल में मैं सुखी दुखी होता आया
जो स्वानुभूति रस से पूरित, शुद्धातम फल न चख पाया
शुद्धात्म भूति का उत्तम फल हे नाथ! आपने पाया हैं।
उस शुद्धातम फल को पाने मेरा भी मन ललचाया है।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अर्घ्य ।।

मेरी अनर्घ्यता की सत्ता शाश्वत है अहा त्रिकाली है।
क्या पर्यायों का अर्घ्य करूँ जो क्षणभंगुर है जाली है।
हे पद्मप्रभ देवाधिदेव चरणों में अर्घ्य करूँ अर्पण।
जो पद अनर्घ्य पाया तुमने वो ही हमको दे दो भगवन्।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

।। जयमाला ।।

जय जय पद्मप्रभ देव नमन, जय जय देवाधिदेव नमन।
सुर नर खग करते सेव नमन, नहिं तुमसा कोई देव नमन।।
पूरव की पर्यायों में तुम, सूरि विमर्शसागर बनकर।
शुभ भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड में, जन्में हो भारत भूँ पर।।
हो गई धन्य ये आज धरा, तेरी पद रज को पाकर के।

अम्बर सौभाग्य मनाता है, चरणों में शीष झुका करके॥
इस पंचम युग में भी तुमने चर्या ऐसी शृंगारी है।
तीनों लोकों की दिव्य शक्तियाँ चरणों पे बलिहारी हैं॥
अगली पर्याय में ब्रह्म स्वर्ग पाकर तुमको हर्षायेगा।
संसार वास का एक मात्र भव ही वाँकी रह जायेगा॥
धारण करके फिर जगत वास का चरम शरीरी अंतिम तन।
ऐरावत में नृप ब्रह्मदेव के घर जन्मोगे तुम भगवन॥
तब एक माह पहले से ही शुभ चिन्ह प्रगट हो जायेंगे।
जो भावी चक्री के वैभव को गा-गाकर बतलायेंगे॥
नौ निधियाँ चौदह रत्न अहा स्वयमेव प्रगट हो जायेंगे।
तब पद्म चक्रवर्ती उनको किंचित भी न अपनायेंगे॥
कीचड़ में खिला कमल जैसे, घर में ही वैरागी होंगे।
तब ही तो घर में तीर्थंकर सुत बनकर अवतारी होंगे॥

क्षण भंगुर जान सभी वैभव छैः खण्डों का परित्याग करें।
बन आप महायोगी भगवन निज आतम से अनुराग करें॥
होगा आतम पुरुषार्थ प्रबल चउ कर्म घाति नश जायेंगे।
पद्मप्रभ केवलज्ञानी का यश तीनों लोक सुनायेंगे॥
फिर दिव्य देशना को पाकर तिहुँ लोक अहा हर्षायेंगे।
कोई श्रमण धर्म अपनायेगा कोई श्रावक बन जायेंगे॥
फिर योग निरोध क्रिया करके प्रभु आतम ध्यान लगायेंगे।
तब शेष अघाति कर्म नशा, प्रभु दशा अशेषी पायेंगे॥
सिद्धालय सा सुख पाने को, श्रद्धालय में आमंत्रण है।
गुणमाला की जयमाला गा-गाकर गुरु चरणों वंदन है॥

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमालायें पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धालय में आ बसो, हे भावी अरिहंत।
अंत आत्मा का मिले, जो है सदा विचिन्त्य॥

(परि पुष्पांजलि क्षिपामि)

आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की पूजन

(रचयिता-आदर्श महाकवि श्रमणाचार्यश्री विमर्शसागर जी)

गुरु विरागसागर के पद में, अर्पित भावों का चंदन।
श्रमण संघ के नायक गुरुवर, महावीर के लघुनंदन॥
आओ गुरुवर हृदय विराजो, दूर करो मम आक्रंदन।
भवसागर से पार उतारो, नाथ! चरण में शत् वन्दन॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्यविरागसागरमुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्यविरागसागरमुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्यविरागसागरमुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणाम्।

क्षीर नीर भरकर मैं लाया, स्वर्णपात्र में हे गुरुवर।
द्रव्य-भाव-नोकर्म अशुचिता, धोने आया हे प्रभुवर॥
हूँ अखण्ड अविनाशी चेतन, निज स्वभाव से पूर्ण प्रभो।
निश्चय श्रद्धा से मिटते हैं, जन्म-जरा-मृतु रोग विभो॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्य विरागसागर मुनीन्द्राय जन्मजरा- मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष की ज्वाला में, भव-भव से जलता आया हूँ।
हे गुरुवर! पर को अपना कह, अब तक रुलता आया हूँ॥
शीतल चन्दन लाया गुरुवर, भव आताप मिटाने को।
शुद्ध-बुद्ध ज्ञायक स्वरूप, निज से निज में प्रगटाने को॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्य विरागसागर मुनीन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्यायों के मद में आकर, नाथ! अनन्तों पद पाये।
शान्त हुई न तृष्णा गुरुवर, नहीं निरापद हो पाये॥
अक्षत धवल अखण्ड चढ़ाऊँ, अक्षय पद अब मिल जाये।
शुद्ध आत्मा के अनुभव से, नाथ! विपद अब टल जाये॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्य विरागसागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गति में भटका अब तक, पंच परावर्तन करके।
काम वासना मिटा न पाया, हाय-हाय नर तन धरके॥
निज स्वभाव में रमकर गुरुवर, ब्रह्मचर्य रसपान करुँ।
पुष्प सुगंधित चरण चढ़ाऊँ, कामभाव अवसान करुँ॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्य विरागसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के पुद्गल सारे, क्षुधा अग्नि के ग्रास बने।
शांत हुई न क्षुधा वेदना, भव-भव से हम दास बने॥
गुरु चरणों नैवेद्य चढ़ाऊँ, क्षुधारोग का नाश करुँ।
अरस, अरूप, अगंध, अस्पर्शी, शुद्धातम में वास करुँ॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्य विरागसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहभाव से हे गुरुवर, चौदह राजू चलकर आया।
विषयों की वैसाखी से, चौरासी का चक्कर खाया॥
महा मोहतम मिट जाये, प्रगटाऊँ ज्ञानज्योति चिन्मय।
कंचन दीप चढ़ाऊँ गुरुवर, निज स्वभाव में हो तन्मय॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्य विरागसागर मुनीन्द्राय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्मों से हे गुरुवर!, दुःख पाया कैसे बतलाऊँ।
भेदज्ञान प्रगटा अब कैसे, पुण्य-पाप में इठलाऊँ॥
सिद्ध प्रभु सम गुण प्रगटाने, अष्ट कर्म का नाश करूँ।
शुद्ध भाव सी धूप चढ़ाऊँ, हर्षाऊँ, उल्लास धरूँ॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्य विरागसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म ध्यान में लीन सदा, फिर शुक्ल ध्यान पुरुषार्थ करें।
नाथ! आप समवीर्य प्रगट हो, मुनि बन हम परमार्थ वरें॥
क्षपक श्रेणि चढ़ केवलज्ञानी, बन भव बीज समाप्त करें।
नाथ! चरण में फल अर्पित हम मोक्षमहाफल प्राप्त करें॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्य विरागसागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिकदर्शन-ज्ञान-वीर्य-सुख, अनुजीवी गुण प्रगटाऊँ।
अवगाहन, सूक्ष्मत्व, अगुरुलघु, अव्याबाध सहज पाऊँ॥
प्रतिजीवी गुण प्रगट जहाँ हों, शुद्ध सिद्ध पद मिल जाये।
नित्यानंद स्वभावी आतम फिर जग में न रुल पाये॥
यही भावना लेकर आया, श्री चरणों में हे स्वामिन्!।
दो विराग गुरु निज विरागता, पाऊँ निज चैतन्य सदन॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चरण में, अर्पित करने लाया हूँ।
ज्ञायक-ज्ञेय दोष हे गुरुवर, सहज मेंटने आया हूँ॥

ॐ ह्रूँ श्री 108 आचार्य विरागसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जिनवाणी सुत हे गुरु! आप गुणों की खान।
सिद्ध प्रभु जैसा मिले, मुक्ति का वरदान॥

हे ऋषिवर! यतिवर! हे गुरुवर! हे मुनिवर! रत्नत्रय धारी।
छत्तीस मूलगुण पाल रहे व्रत समिति गुप्तियों के धारी॥
निज में अखंड ज्ञायक प्रभु की सत्ता को जब स्वीकार किया।
जिनलिंग स्वयं ही प्रगट हुआ जन-जन ने जय-जयकार किया॥
सम्यक्त्व शुद्ध अनुभव विशुद्ध, जब निज में निज को प्राप्त किया।
चैतन्य तेज तब प्रगट हुआ, दर्शन मोहान्ध समाप्त किया॥
सम्यक्त्व महानिधि की महिमा तिहुँ लोकों में गाई जाती।
अमरों की मनहर अमरपुरी इसके आगे शर्मा जाती॥
हे नाथ! ज्ञान की महिमा को, निज भेदज्ञान से जाना है।
मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूँ, अनुभव से आप बखाना है॥
हे ज्ञान-ध्यान तप लीन श्रमण, मेरे अन्तस में वास करो।
शुद्धात्म ज्ञान हो प्रगट मेरे, अज्ञान भाव का नाश करो॥

बाईस परीषह, द्वादश तप दस धर्म सहज ही पाल रहे।
शुद्धोपयोग में रमकर के शुभ-अशुभ सहज ही टाल रहे॥
व्यवहार और निश्चय स्वरूप, रत्नत्रय के आराधन में।
रहते हो गुरुवर आप निरत, निज पंचाचार के पालन में॥
शुद्धात्म तत्व के अनुभव की, नित मणियाँ बाँटा करते हो।
षट्द्रव्यों में चैतन्य द्रव्य-गुण-पर्यय छाँटा करते हो॥
पाने को नित्य निराकुल, सुख अनुभव पथ पर बढ़ते जाते।
आगम कहता है शिवपथ पर, ये कर्मों से लड़ते जाते॥
अध्यात्म और आगम सचमुच, साकार आपकी चर्या में।
हे महायोगि! हे महासन्त, अनुभव प्रगटा है किरिया में॥
मैं भी अनगार बनूँ गुरुवर, बस यही भावना भाता हूँ।
शुद्धात्म प्रकाशी महा अर्घ्य, गाकर जयमाल चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्य विरागसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल की शुभ भावना, स्वातम मंगल पाय।
मंगल भावों से गुरु, पुष्पांजली चढ़ाय१

(परिषुष्पांजलिं क्षिपामि)

भावलिंगी संत भावी अरिहंत, परम पूज्य राष्ट्रयोगी

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की पूजन

रचियता : श्रमण श्री विचिन्त्य सागर मुनि

।। स्थापना ।।

हे वंदनीय! हे पूज्यनीय! हे करुणावत! तुम्हें प्रणाम।
हे महामुनि! हे महासंत! भावी अरहंत! तुम्हें प्रणाम।
सौभाग्य जगे भवि जीवों के भव भव के पावन पुण्य फले
जो गुरू विमर्श में भावी पद्मप्रभ केवलि के दर्श मिले।।
आओ हृदयासन पर आओ हे नाथ ! पुकार लगाता हूँ।
हे अनासक्त योगी! आओ श्रद्धा से तुम्हें बुलाता हूँ।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

।। जल ।।

अजनबी आत्मा से अब तक, बस जनम मरण करता आया।
दुख सहे अनंतो बार मगर भव सिंधु तीर न मिल पाया।
गुरूदेव ! आपके चरण मिले, आचरण मिले, शुभ शरण मिले।
ये प्रासुक जल अर्पित गुरूवर ! अब जनम मिले न मरण मिले।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

।। चंदन ।।

संतप्त रहे अब तक गुरुवर!, अपने स्वभाव से अनजाने।
चंदन चरणों में लाये हैं स्वाभाविक शीतलता पाने।।
रागादिक भावों की ज्वाला से झुलसा अंतस का उपवन।
भवताप मिटाओ हे यतिवर ! चरणों में करता हूँ वंदन।।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अक्षत ॥

पर्यायों में रंजायमान नाना पद की मन चाह लिये।
चारों गतियों में भ्रमण किया नित इन्द्रिय विषय कषाय लिये।
गुरुवर ! अगम्य आगम में रम, तुमने निज पद को पाया है।
अक्षय निज पद पाने गुरूवर ! ये अक्षत अर्घ्य चढ़ाया है।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ पुष्प ॥

कामादिक भावों ने अब तक पर्याय मेरी हर लूटी है।
इस मदन दर्प में हे गुरूवर ! निज परिणति लगती झूठी है।
शैलेषी भावों का वैभव निज परम ब्रह्म की छाया में।
पाने को पुष्प समर्पित हैं, गुरुदेव शरण में आया मैं।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ नैवेद्य ॥

नाना व्यञ्जन मय पुद्गल को खा खाकर तन को पुष्ट किया।
लेकिन निज चिदानंद रस से न चेतन को संतुष्ट किया।
इस महरोग की उपशमना का मार्ग आपने बतलाया।
इसलिए सजा नैवेद्य थाल हे गुरुवर ! चरणों में आया।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वमापीति स्वाहा।

॥ दीप ॥

निर्मोह स्वभावी आतम की जब ज्योति प्रखर हो जायेगी।
तब मोह भाव की अँधियारी ये रात स्वयं खो जायेगी।
गुरुदेव आपने स्वानुभूति का जगमग दीप जलाया है।
निज मोह मेंटने दास चरण में मृणमय दीपक लाया है॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ धूप ॥

जब मैंने काषायिक भावों का नेह निमंत्रण भेजा था।
तब तब आकर के कर्मों ने चेतन स्वभाव को छेदा था।
निष्कर्म आत्मा की महिमा, गुरुवर जब से दिखलाई है।
तब से कर्मों को दहकाने निज अनुभव अनल जलाई है॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ फल ॥

पग पग कर्मों का है विपाक, पग पग सुख दुख फल देते हैं।
नाना रूपों में छलिया बन आतम स्वभाव छल लेते हैं।
शाश्वत सुख रस मय शिवफल को पाने का पथ दर्शाया है।
इसलिए दास ये उत्तम फल की भेंट चढ़ाने लाया है॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अर्घ्य ।।

निज है अनर्घ्य आतम स्वभाव लेकिन स्वभाव का बोध नहीं।
पर में खोया, पर को रोया, शाश्वत स्वभाव पर शोध नहीं।।
निज का अनर्घ्य वैभव पाने, यह अर्घ्य समर्पित करता हूँ।
चेतन का पर्श, विमर्श मिले, गुरुवर विमर्श उर धरता हूँ।।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। जयमाला ।।

भव भव पाप पुण्य शातिशय जब बनकर विपाक लहराता है
तब गुरु विमर्शसागर बनकर भगवान धरा पर आता है।
कई कई पूरब पर्यायों में निर्ग्रंथ भावलिंगी बनकर।
रत्नत्रय धर्म सजाया था शुभ भावों से आराधन कर।।
गुरुवर ने पूरब भव में भी निर्ग्रंथ दशा आराधी थी।
बन करके महामुनि गुरुवर ने श्रेष्ठ समाधि साधी थी।।

लेकिन मृत्यु की बेला में किंचित करुणा आई मन में।
इसलिए स्वर्ग न जाकर के गुरुवर जन्मे मानव तन में।।
तब नगर जतारा पिता सनत, माता भगवति हर्षाईं थी।
भावी अर्हंत आगमन था सृष्टि में खुशियाँ छाईं थीं।।
यौवन आया वैराग्य जगा निर्ग्रंथ महामुनिराज बने।
फिर भवि जीवों का हित करने आचार्य परम गुरुराज बने।।
छत्तीस मूलगुण का पालन संग आत्म ध्यान का बल पाया।
प्रगटी जब भावलिंग महिमा त्रय लोको में अतिशय छाया।।
पंचम युग में दुर्लभतम थी वो शांति भक्ति खुद सिद्ध हुई।
अर्हंत बनेंगे गुरुवर जी भावी पर्याय प्रसिद्ध हुई।।
संकट मोचन तारणहारे हैं, गुरु विमर्श के जयकारे।
जो भी श्रद्धा से जप लेता, मिट जाते उसके दुख सारे।।
गुरुवर छोटे बाबा अहार जी के जग में जाने जाते हैं।

देवाधिदेव श्री शान्तिनाथ जी बाबा बड़े कहाते हैं।।
कर श्रेष्ठ समाधि का साधन गुरुदेव यहाँ से जायेंगे।
जाकर के ब्रह्म स्वर्ग में वो लोकान्तिक पदवी पायेंगे।।
भव एक मात्र रह गया शेष ये ब्रह्मऋषी निज रमण करें।
वैराग्य भाव का अनुमोदन, वैराग्य भाव अनुभवन करें।।
इस ब्रह्मस्वर्ग से चयकर वो ऐरावत क्षेत्र पधारेंगे।
बन ब्रह्मदेव राजा के सुत, चक्री की पदवी धारेंगे।।
होंगे ये पद्म चक्रवर्ती, भारी विरक्तता धारेंगे।
चक्री का वैभव पाकर भी, किंचित भी न स्वीकारेंगे।।
इन चक्रवर्ती के सुत बनकर तीर्थंकर अवतारी होंगे।
अपने सुत को दे राजपाट फिर चक्री वैरागी होंगे।।
धर भेष दिगम्बर महामुनि निज आतम ध्यान लगायेंगे।

तब सहज घातिया कर्म नाश, अर्हंत दशा प्रगटायेंगे॥
कैवल्य सम्पदा प्रगटेगी सुर नर खग सब हर्षायेंगे।
पद्मप्रभ केवलज्ञानी की नाना स्तुतियाँ गायेंगे॥
जब पद्मप्रभ स्वामी जिनेन्द्र की दिव्य देशना बिखरेगी।
सुन करके भव्य प्राणियों की चेतन परिणतियाँ निखरेंगी॥
फिर शेष अघाति नाश प्रभु निर्वाण दशा प्रगटायेंगे।
अव्याबाधत्व महासुख पा सिद्धालय में बस जायेंगे॥
है महापुण्य का उदय हुआ, आओ गुरु का वंदन करलें।
बस दो भव के अवतारी हैं, भावों को श्रद्धा से भरलें॥
गुरु विमर्श सागर बने हैं जो निर्मल संत।
भावी पद्मप्रभ बनेंगे ये ही अरहंत॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
।।पुष्पांजलि क्षिपामि।।

सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी का अर्घ

शुभ भावों का निर्मल जल है विनय भाव का है चंदन।
गुरु वंदन ही अक्षत हैं ये भक्ति सुमन का अभिनन्दन।
मन वच तन को आत्म समर्पण मोह क्षोभ का शमन करुँ।
परम पूज्य आचार्य शिरोमणि विराग सिंधु को नमन करुँ।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्यश्री विरागसागर
यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदर्श महाकवि

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की पूजन

रचयिता : श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)

पाद प्रक्षालन

करते गुरुपद प्रक्षालन, हो मम् पापों का गालन।
गुरु की पद रज से ही हो, मेरा जीवन संचालन।।
गुरु का चरणोदक, सब कष्ट मिटाये रे।
गुरुवर विमर्शसागर जी के चरण धुलाये रे।
चरणों की पद रज हम शीष चढ़ाये रे।।

स्थापना

मन भाव सजाकर ये गुरु चरणों में आये।
तुम रत्नत्रय धारी, हम रत्नत्रय चाहें।

आओ तिष्ठो गुरुवर मेरे हृदयासन पर।
कर दो हमको पावन अपने द्वय-पग धरकर।
दिखलाओ हे गुरुवर!, अब मुक्ति की राहें। तुम.

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

जल

भावों का जल भरकर श्रद्धा भाजन लाये।
तुम जैसी निर्मलता पाने मन ललचाये॥
मिथ्यात्व असंयम का अंधियार घना छाया॥
अविनाशी चेतन का नहिं रूप नजर आया॥
मेंटो ये जनम मरण शुभभाव सजा लाये। तुम...

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

रागादिक भावों से भवताप बढ़ाया है।
स्वाभाविक शीतलता का घात कराया है।
अर्पित गुरुवर चरणों ये मलयागिरि चंदन।
मेंटो गुरुवर ! मेरा ये भव भव का क्रन्दन।
जिसमें भवताप न हो वो वैभव मिल जाये। तुम..

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

अब तलक विभावों की परिणति में भरमाया।
स्वातम पद पाने की मन चाहत ले आया।
ये पुंज धवल अर्पण, मम् भाव धवल होवें।
पर्यायों में अपनी आतम बुद्धि खोवें।
सम्पूर्ण विभावों की अब संतति नश जाये। तुम..

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

निष्काम आत्मा का स्वामी हूँ हे गुरुवर।
अब्रह्म के वश होकर भटका हूँ मैं दर-दर।
निज परमब्रह्म चेतन-रस का रसपान करूँ।
शैलेषि अवस्था को पाने मन भाव धरूँ।
ये पुष्प तुम्हें अर्पित मम काम विनश जाये। तुम...

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

निज चिदानंद-रस का मैं पूर्ण समुन्दर हूँ।
गुरुवर! अनंतबल का मैं स्वामी अंदर हूँ।
ये क्षुधा की बीमारी भव-भव भटकाती है।
जितना मैं तृप्त करूँ ये बढ़ती जाती है।
ये क्षुधा नशाने को नैवेद्य चरण लाये। तुम...

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वमापीति स्वाहा।

दीप

मोहान्ध बना गुरुवर पर में ही भरमाया।
निज का पर का गुरुवर ! नहिं भेद समझ पाया।
ये दीप समर्पित है, मोहान्ध नशाने को।
निज की चैतन्यमयी परिणति प्रगटाने को।
आशीष यही देना यह मोह विनश जाये। तुम...

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

जब कर्म उदय आये मैंने राग और द्वेष किया।
कर्मों ने जो भी दिया मैंने वैसा भेष लिया।
कर्मों के बस होकर भव रीति बढ़ाई है।
निष्कर्म निजातम से न प्रीति लगाई है।
ज्यौं अनल में धूप जले, मम् कर्म भी जल जायें। तुम...

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

संयोग सजाकर के सुख मान रहा था मैं।
उनकी नश्वरता से अन्जान रहा था मैं।
भव-भव में कर्मों के फल में ललचाया हूँ।
निज गुण के फल पाने चरणों में आया हूँ।
सुख रस से भरा हुआ, शुद्धातम फल पायें। तुम...

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अर्घावलियों के संग शुभभाव चढ़ाते हैं।
चाहत अनर्घ-पद की नित हृदय सजाते हैं।
स्वातम अनर्घ पद बिन भव-भव में दुःख पाया।
सुख पाने पद पाये, पर सुख न कहीं पाया।
अक्षय स्वातम पद का अक्षय सुख मिल जाये। तुम...

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

निस्पृहता की आप हो नूतन परिभाषा।
चर्या गुरुवर आपकी बोधि की भाषा॥
दर्शन ज्ञान चरित्र शुभ तप और वीर्याचार।
पूरी दृढ़ता से करें पालन पंचाचार॥
मन वच तन को गुप्तकर आतम करें विहार।
अशुभ टला, शुभ चाह न, शुद्ध का करें विचार॥
सत्य अहिंसा, शील और अपरिग्रह का हार।
अचौर्य आदि महाव्रतों से चेतन शृंगार॥
क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, तप त्याग।
आकिन्चन संयम धरम, ब्रह्मचर्य अनुराग॥
तरुणाई में ही लगी अच्छी संयम राह।
विषय भोग भोगे नहीं न ही किया विवाह॥

विषय भोग संसार से जगा विरक्ति भाव।
गुरु ''विराग'' को पा लिया जैसे शीतल छाँव॥
गुरु ''विराग'' में कर लिया मात-पिता का दर्श।
छोड़ नाम ''राकेश'' तुम, धारण किया ''विमर्श''॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु आशिका

गुरुवर के पावन गुणों की मंगल गीता गाते हैं।
आज यहाँ गुरु पावन गुण हम गाते और सुनाते हैं।।
गुरुवर की इस आशिका से भव के पाप नशाते हैं।
श्री गुरुवर की आशिका हम अपने शीष चढ़ाते हैं।।

।।पुष्पांजलि क्षिपामि।।

आदर्श महाकवि, भावलिंगी संत प.पू. श्रमणाचार्य

श्री विमर्शसागर जी महाराज की बुंदेली पूजन

पाद प्रक्षालन

चलत ईर्या समिति से गुरुवर, देख देख पग धरवें।
स्वर्ण कलश में जल भरके हम, पग प्रक्षालन करवें।।
गुरु त्याग पनहइयाँ ककरन पे भी, चलत है पईयाँ पईयाँ।
सारे जग में ढूढों हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

स्थापना

भाव सजावें भगत बुलावें, हिरदय में पधरावें।
गुरुवर अइयो, भूल न जइयो, हम सब टेर लगावें।।
अष्ट द्रव्य को थाल सजाये, द्वार खड़े सब गुइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउ नइयाँ।।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर जी यतिवरेभ्यो अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

द्रव्य समर्पण

आये पूजन करन, आये पूजन करन, पूजा हमाई स्वीकारौ।
लम्बो रस्सा लये बाल्टी, कुइयाँ नेंगर गये हम।।
फींचो छन्ना, सुखा घाम में, पानी छान भरे हम।।
ऊ पानी से गुरु खों पूजें, धन्य भई वा कुइयाँ।।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

चंदन की मुठिया से सिलिया पे घिस लई जा केशर।
रजत रकेवी में भरके हम, चले आये गुरु के दर।।
ऊ शुद्ध सुगंधित केशर से हम पूजें गुरु की पइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

धान दरी अपने हाथन से, सूपा से फटकारी।
लैके चाँउर छाने वीने, धोउन गये अटारी।।
उन अक्षत चाँउर से पूजें, गाके ता ता थइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

गेंदा बेला जुही चमेली, बारी सें लै आये।
महकत हैं जे ऐसे भइया, सबई के मन ह्वायें।।
उन फूलन सें गुरु खों पूजें, गुरवर काम नसइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

लई लकरियाँ सूखीं सूखीं, चूल्हो फूंक जराओ।
धरी करहिया, बरा थड़ूला, सद् नेवज बनबाओ।।
गुरु पूजन की परी हुलतुली, नई बन पाई सिमड़्याँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

लई कपास पहला की बाती, घी में खीब डुबाई।
गुरु पूजन खों दिया मैं घरकें, जगमग लौ प्रगटाई।।
घी निकलो हतो दूध से जिनके, धन्य भई वे गइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अगर तगर आदिक से मिश्रित, धूप दशांगी लेवें।
गुरु पूजन खों कुण्ड जराकें, आओ धूप हम खेवें।।
महक उठी हैं दशों दिशायें, नाचें लोग लुगइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

डरपक गदरीं बिहीं पपीता, शाहें लेदी लावें।
गुरु गुण के फल पावे खों, हम फल की भेंट चढ़ावें।।
गुरु गैल सांची है बांकी, सब है भूल भुलइयाँ।।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

आठों दरब मिलावें गावें, छंद अरघ को सब जन।
आओ मिलके अर्घ चढइये, करिये गुरु की पूजन।।
ढुलक नगडियां, बजा बजाकें, गावें आज बधइयां।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउ नइयां।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जयमाला

नोनों लगत गुरु को दोर, निहारत सब जन गुरु की ओर
ज्ञान की धार बहाई है....2.....2.....
आठों दरव सजाके हमने, पूजा रचाई है।
कि विनती सुन लइयो, तनक तौ सुन लइयो।।2।।
गणाचार्य के शिष्य गुरु जी, जो वंदन स्वीकारों।

हमखों भी अपनी वाणी से, भव से पार उतारो।।
लबरा छाग रहे हैं जग में, भवसागर में डारत।
सांची सांची बोलन बारे, सबखों तुमई उबारत।।
नाम है सुंदर गुरु विमर्श, सुनत है जो कोउ पाउत हर्ष।

वीर की मुद्रा पाई है....

आठें दरव सजाके हमने, पूजा रचाई है।
कि विनती सुन लइयो, तनक सौ सुन लईयो।
वैरी बनो करम जो हमरो, भव भव में हतो पेरत।
कहूं गैल न मिली चैन की, हारे हेरत हेरत।।
बड़ो पुण्य औसर जो आओ, भावलिंगि गुरु पाये।
हेरत हेरत बहु दिन बीते, अब दर्शन मिल पाये।।
कि अब ना संग छोरियो नाथ, चरण में रख दओ हमने माथ।

तुम्हई से आस लगाई है.....

आठों दरव सजाके हमने, पूजा रचाई है।
कि विनीत सुन लइयो, तनक तौ सुन लइयो।
बुंदेली में पूजा लिखके, हमने पुण्य बढाओ।
आठ दरव से तुम्हें पूजकें, अपनो भाग्य जगाओ।।
वैरागी निर्ग्रंथ तपोधन, तुम्हई हौ सुख की छइयां।
सारे जग में ढूंढो हमने, तुमसो गुरु कोउ नइयां।
तपोधन तुम्हीं हो निर्ग्रंथ, धारलओ तीर्थंकर को पंथ।

वीतरागी छवि भाई है....

आठों दरव सजाके हमने, पूजा रचाई है।
कि विनती सुन लइयो, तनक तौ सुन लइयो

ॐ ह्रूँ श्रमणाचार्यश्री विमर्शसागर यतिवरेभ्यो जयमाला सहित पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द श्रृंखला बुंदेली की, देउत जो 'संकेत'।
विनत रहौ गुरु चरण में, जागै आत्म 'विवेक'।।
पुष्प समर्पित गुरु चरणन में, जो चढ़वें उच्च चढ़इयाँ।
सारे जग में ढूढो हमनें, ऐसे गुरु कउं नइयां।

।।दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत।।

सृजनकार
पं. संकेत जैन 'विवेक'
देवेन्द्रनगर, पन्ना, म.प्र.

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की आरती

(रचयिता : श्रमण विचिन्त्यसागर (संघस्थ)

रत्नों का दीपक लाया, भावों का घी भर लाया।
कंचन की थाली गुरुवर आरती,
ओ-गुरुवर हम सब उतारें तेरी आरती।। ओ गुरुवर.....

ग्राम जतारा जन्म लिया है भगवती हैं माता-2।
सनतकुमार के लाल तुम्हें हम-2, झुका रहे माथा।। ओ गुरुवर.....

पाँच महाव्रत धारी गुरुवर, परीषह के जेता-2
मुक्ति पथ के तुम ही गुरुवर-2, हो सच्चे नेता।।ओ गुरुवर.....

बाल ब्रह्मचारी गुरुवर न झूठा जग भाया-2
गुरु 'विराग' के चरणों आकर-2, संयम अपनाया।।ओ गुरुवर.....

धरती अम्बर दशों दिशाएँ वंदन करती हैं-2
सारी सृष्टि गुरु चरणों में-2, अभिनंदन करती है।।ओ गुरुवर.....

करूणा सागर गुरु हमारे, चरणों बलि-बलि जायें-2
जब तक मुक्ति मिले न हमको-2, भव-भव तुमको पायें।।ओ गुरुवर.....

वीतरागता गुरु की चर्या से नित झरती है-2
चरणों में नत होके साधना-2 अभिनंदन करती है।। ओ गुरुवर.....

छोटे बाबा सिद्धक्षेत्र, अहार के आप कहाते-2
जो भी श्रद्धा से आता है-2, सबके कष्ट मिटाते।।।। ओ गुरुवर.....

अतिशय कारी बाबा हैं ये, जो भी चरणों आते-2
अपने मन की सभी मुरादें-2, वो पूरी कर जाते।। ओ गुरुवर.....

शान्तिनाथ प्रभु के लघुनंदन, सुर-नर सब गुण गाते-2
यक्ष-यक्षिणी संग देव गण-2, पूजा नित्य रचाते।।।। ओ गुरुवर.....

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर चालीसा

(रचियता : श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि)

दोहा

गुरु विरागसागर चरण, वंदन बारम्बार।
सच्ची श्रद्धा भक्ति से, गुरु विमर्श उर धार।।
शब्दों की सुमनावली, चरणों गुरु गुणगान।
चालीसा में कर रहे, गुरु 'विमर्श' यशगान।

चौपाई

छत्तिस गुण से मंडित गुरुवर, विमर्शसागर सूरी यतिवर।
परम वीतरागी जिन मुद्रा, दर्शन से टूटे चिर निद्रा।।
मार्ग शीर्ष वदि पंचम आई, गुरुवार का दिन सुखदाई।

पन्द्रह ग्यारह सन् तेहत्तर, जन्मे गुरु बुन्देली भूँ-पर।।
नगर जतारा बजी बधाई, लखकर माँ भगवति मुस्काई।
पुत्र रतन तुमसा जब पाया, पिता सनत का मन हर्षाया।।
गौर वर्ण मूरत मनहारी, लगा मुक्ति वधु हुई तुम्हारी।
लेकिन जब तरुणाई आई, राग रंग परिणति मन भाई।
गुरु विराग का संघ मनोहर, हो जैसे अध्यात्म धरोहर।
नगर जतारा दर्शन पाया, मन ही मन वैराग्य जगाया।।
फरवरि सत्ताइस पिचानवे, सिद्ध क्षेत्र आहार जानवे।
शांतिनाथ की मूरत प्यारी, गुरुवर बने बाल ब्रह्मचारी।।
तेइस फरवरि छियानिव आया, श्री गुरु से ऐलक पद पाया।
पूर्व नाम राकेश तुम्हारा, गूँजा अब 'विमर्श' जयकारा।

गुरु विराग दें शिक्षा-दीक्षा, पूर्व कर्म ले रहे परीक्षा।
अंतराय परीषह बन आये, 'अंतराय सागर' कहलाये।।
चतुर्मास सत्तानिव आया, भिण्ड नगर में उत्सव छाया।
'जीवन है पानी की बूँद' जब, कालजयी रचना प्रगटी तब।।
गुरुवर महाकवि कहलाये, महाकाव्य पहिचान बताये।
कमर लँगोटी लगती भारी, करली जिन दीक्षा तैयारी।।
पौषबदी एकादश आई, सोमवार मुनि दीक्षा पाई।
चौदह बारह सन् अठानवे, क्षेत्र बरासो भिण्ड जानवे।।
अध्यातम की ज्योति जलाई, समयसार की महिमा गाई।
वाणी सुन सब बने मुमुक्षु, करें प्रार्थना बनने भिक्षु।।
गुरु विराग ने क्षमता जानी, 'सूरी-पद' देने की ठानी।

दो हज्जार पाँच सन् आया, गुरु विराग 'सूरीपद' गाया।
विद्वत जन आचार्य पुकारें, निस्पृह गुरुवर न स्वीकारे।
मन में था संकल्प निराला, गुरु बिन पद नहीं लेने वाला।।
वह भी शीघ्र घड़ी शुभ आई, गुरु की आज्ञा गुरु ने पाई।
राजस्थान धरा अति पावन, नगर बाँसवाड़ा का आँगन।
बारह-बारह दो हजार दस, रविवार दिन भक्त कई सहस।
मार्गशीर्ष सुदि सप्तमि उत्सव, सूरीपद का महामहोत्सव।।
गुरु विराग ने 'सूरि' बनाया, जन-जन ने जयकार लगाया।
गुरुवर जिस पथ राह गुजरते, जिनशासन के मेले भरते।।
'योगसार' प्राभृत है नीका, 'विमर्शोदयी' प्राकृत टीका।
लिख गुरु ने इतिहास रचाया, जिनश्रुत का सम्मान बढ़ाया।।

आगम अध्यातम का संगम, गुरुचर्या में दिखता हरदम।
शिष्यों को सन्मार्ग दिखाते, अनुशासन का पाठ सिखाते।।
शांत, सहज, अति सरल स्वभावी, हों गुरुवर तीर्थंकर भावी।
जब तक हैं ये चाँद सितारे, चिर आयुष हों गुरु हमारे।।

दोहा

गुरु चालीसा भाव से, पढ़े सुनें चित लाय।
परम यशस्वी हो यहाँ, परभव में यश पाय।।
गुरु भक्ति गुरु प्रार्थना, निश्रेयस सुखदाय।
जनम मरण को नाशकर, नर 'विचिन्त्य' फल पाय।।

पंच परमेष्ठी आरती

(रचयिता-आदर्श महाकवि श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज)

बाजे छम छम छम छमाछम बाजे घुँघरू-बाजे घुँघरू,
हाथों में दीपक लेके आरती करूँ।

पहली आरति अरिहंताणं-2
कर्म घातिया चउ नासाणं-2
चारों गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...।

दूसरी आरति सिरि सिद्धाणं-2
पाने मुक्तिफलं निव्वाणं-2
आठों गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...।

तीसरी आरति आइरियाणं–2
पंचाचार निपुण समणाणं–2
बोधि गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...।

चौथी आरति उवज्झायाणं–2
पच्चिस गुण धारी अप्पाणं–2
ज्ञान गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...।

पाँचवीं आरति सव्व साहूणं–2
ज्ञान ध्यान तप लीन गुरूणं–2
समता गुण पाने गुण वंदना करुँ, हाथों में...।

बाजे छम छम छम छमाछम बाजे घुँघरू–बाजे घुँघरू,
हाथों में दीपक लेके आरती करूँ।

आचार्य वन्दना

सभी शिष्य आचार्य श्री (गुरूदेव) के समीप गवासन से बैठें तथा हे भगवन् ! वन्देऽहं (हे भगवन् ! मैं आपकी वंदना करता हूँ) ऐसी विज्ञप्ति करें इसके बाद जब आचार्यश्री, वन्दस्व (वन्दना करो), ऐसी आज्ञा कर दें, तब नीचे लिखी आचार्य वंदना करनी चाहिये।

श्री सिद्ध भक्ति

अथ पौर्वाह्णिक (आपराह्णिक) आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वन्दना स्तव समेतं श्री सिद्ध भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(९ बार णमोकार मंत्र, २७ उच्छ्वास में कायोत्सर्ग करना)

सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु लघु-मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।१।।
तव सिद्धे णय-सिद्धे संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धेय।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि।।२।।

अंचलिका

इच्छामि भन्ते्। सिद्धभक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्म चरित्त जुत्ताणं, अट्ठ विह कम्म विप्प मुक्काणं, अट्ठ गुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय सिद्धाणं, संजम सिद्धाणं, चरित्त सिद्धाणं अतीताणागद वट्टमाण-कालत्तय सिद्धाणं, सव्व सिद्धाणं, सया णिच्चकालं अंच्चेमि, पूज्जेमि वन्दामि णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहि मरणं, जिण गुण सम्पत्ति होउ मज्झं।

श्री श्रुत भक्ति

अथ पौर्वाह्णिक (आपराह्णिक) आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वन्दना स्तव समेतं श्री श्रुत भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(९ बार णमोकार मंत्र, २७ उच्छ्वास में कायोत्सर्ग करना)

कोटि शतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीति-स्त्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्त्र संख्या, मेतच्छ्रुतं पंच पदं नमामि।।१।।
अरहंत भासियत्थं गणहर देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणभामि भतिजुत्तो सुद-णाण-महोवहिं सिरसा।।२।।

इच्छामि भंते ! सुद भत्ति काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं अंगो वंग-पइण्णय-परियम्म-सुत्त-पढमाणि ओग-पुव्वगय चूलिया चेव सुत्तत्थय-थुइ धम्म-कहाइयं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ गमणं समाहि मरणं, जिण-गुण सम्पत्ति होउ मज्झं।

श्री आचार्य भक्ति

अथ पौर्वाह्निक (आपराह्निक) आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वन्दना स्तव समेतं श्री आचार्य भक्ति कायोत्सर्गं कुर्वेऽहं।

(९ बार णमोकार मंत्र, २७ उच्छ्वास में कायोत्सर्ग करना)

श्रुतजलधि-पारगेभ्यः, स्व पर मत-विभावना पटुमतिभ्यः।
सुचरित तपो-निधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो-गुण गुरुभ्यः।।१।।
छत्तीस गुण-समग्गे पंच विहाचार करण संदरिसे।
सिस्साणुग्गह कुसले धम्माइरिये सदा वन्दे।।२।।

गुरुभक्ति संजमेण य तरन्ति संसार सायरं घोरम्।।
छिण्णंति अट्ठ कम्मं, जम्मण मरणं ण पावेंति।।३।।
ये नित्यं व्रत मंत्र होम निरता, ध्यानाग्नि होत्राकुला।
षट्-कर्माभि-स्तपोधन-धनाः, साधु क्रियाः साधवः।।
शील-प्रावरणा-गुण प्रहरणाश्-चन्द्रार्क-तेजोऽधिका।
मोक्ष द्वार-कपाट-पाटन भटाः प्रीणन्तु माम् साधवः।।४।।
गुरुवः पांतु नो नित्यं ज्ञान दर्शन नायकाः।
चारित्रार्णव-गंभीरा, मोक्ष मार्गोपदेशकाः।।५।।

अञ्चलिका

इच्छामि भंते। आइरिय भत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त जुत्ताणं-पंच विहाचाराणां-आइरियाणं, आयारादि सुद-णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं, ति-रयण गुण-पालण-रयाणं सव्व

साहूणं, सया णिच्चकालं अच्चेमि, पूजेमि वन्दामि, णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहि-मरणं जिण गुण सम्पत्ति होउ मज्झं।

आचार्य परम्परा के छंद

श्री 'आदिसागर- आचार्यः गुरुं चारित्र विभूषितं।
भिषजं मांत्रिकं ज्योति-र्विदं नैयायिकं मतं।
निमित्तज्ञं बुधैः पूज्यं, सर्व संग विदूरितं।
प्रभाव शालिनं धीरं, वंदे त्रैविध भक्तितः।।१।।

वंदे श्री 'महावीर कीर्ति' सुगुरुं, विद्याब्धि पार मदं।
कालेद्यापि तपोनिधिं गुण गणैः, पूर्णम् पवित्रं स्वयं।
नग्नत्वादिक दुष्ट शत परिषहै, र्भग्नोन यो योगिराट्।
पायान्मां कुबुद्धि कुष्ट कुहरात, संसार पाधोनिधे।।२।।

कल्पांत काव्य वचना विषया गुरुणां।
लोकोत्तराऽखिल गुण स्तवनं प्रशंसा।
स्वामिन् नमोस्तु सिरसा मनसा वचोभिः।
दद्यात् शिवं 'विमलसागर' सूरिवर्यः।।३।।

स्वाध्याय ध्यान तप त्याग महान मूर्तिः।
सिद्धान्त सार कुशलो जिनदेव भक्त्या।
महावीरकीर्ति गुरुवर्य सुपट्ट शिष्य।
नित्यं नमामि सूरि सन्मतिसागराय।।४।।

तुभ्यं नमो रवि समा तव तेजकाय।
तुभ्यं नमः शशि समुज्ज्वल वैभवाय।
तुभ्यं नमो दुरित जाल विनाशनाय।
तुभ्यं नमो गुरु 'विराग' शिव प्रदाय।।५।।

तुभ्यं नमः परम रूप दिगम्बराय।
तुभ्यं नमः सु जिनशासन वर्धनाय।
तुभ्यं नमो गुरु विराग सु नंदनाय।
तुभ्यं नमो गुरु 'विमर्श' यतीश्वराय।।६।।

प्रायश्चित याचना विधि

हे स्वामिन् ! (पक्षे) (चातुर्मासे) (संवत्सरे) (देवसिय) (राइय) अष्ट विंशति मूल गुणेषु (मुनिव्रत, आर्यिका, व्रत क्रियायां) मनसा वचसा कर्मणा कृत-कारितानुमोदनैः आहारे विहारे निहारे च रागेण द्वेषेण मोहेन भयेन लज्जया प्रमादेन वा जागरणे स्वप्ने च ज्ञाताज्ञात भावेन अतिक्रम-व्यतिक्रमाति- चारानाचार इत्यादयो दोषा लग्नाः तान् क्षमित्वा प्रायश्चित्त-दानेन शुद्धं कुर्यात् माम्।

लघु प्रतिक्रमण

चिदानन्दैक-रूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः।।

अर्थ-मैं नित्य उन परम सिद्धि को प्राप्त परमात्मा को नमस्कार करता हूँ जो परमात्मपद के प्रकाशन में अग्रसर हुये हैं जिन्होंने अनेक रूपता में स्थित चिदानन्द प्रभु को सन्मार्ग के आधार स्वयं को परमात्म पद में स्थित कर जिस परमात्म पद को दर्शाया है मुक्ति प्राप्त की है अनेक गुणों के भण्डार हुए हैं।

हे प्रभु ! मैंने अब तक पाँच मिथ्यात्व, बारह अविरति, पन्द्रह योग, पच्चीस कषाय सत्तावन, आस्रव इन्हीं के अन्तर्गत संरम्भ, समारम्भ, आरम्भ मन-वचन-काय द्वारा, कृतकारित अनुमोदना तथा क्रोध, मान, माया, लोभ से 108 प्रकार नित्य ही तीन दंड, त्रिशल्य, तीन वर्ग, राजकथा, चोरकथा, स्त्रीकथा, भोजनकथा में अपने को अनादि मिथ्या अज्ञान मोहवश परिणमया, परिणमाता रहता हूँ और जब तक सद्बोद्धि की प्राप्ति नहीं हुई परिणमाता रहूँगा, ऐसी दशा में अब मैंने जिनवाणी द्वारा सत समागम से जो उपलब्धि प्राप्त की है उससे ऊपर कथित आस्रव में जो पाप लगा हो वह सब मिथ्या हो मैं पश्चाताप करता हूँ।

मैंने भूल से मिथ्यातवश अज्ञानी दशा में जो, इतरनिगोद सात लाख, नित्यनिगोद सात लाख, पृथ्वीकाय सात लाख, जलकाय सात लाख, अग्निकाय सात लाख, वायुकाय सात लाख, वनस्पतिकाय दस लाख, दो इन्द्रिय दो लाख, तीन इन्द्रिय दो लाख, चार इन्द्रिय दो लाख, पंचेन्द्रिय पशु चार लाख, मनुष्य गति चौदह लाख एवं देवगति चार लाख नरक गति, चार लाख कुल चौरासी लाख योनि माता पक्ष पितापक्ष एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ सूक्ष्म बादर पर्याप्त अपर्याप्त लब्धि अपर्याप्त आदि जीवों की विराधना की हो तथा इन पर राग-द्वेष द्वारा जो पाप लगा हो वह सब मिथ्या होवें मैं पश्चाताप करता हूँ।

हे भगवन् ! मैंने चार आर्त्त ध्यान, चार रौद्र ध्यान या अतिचार अनाचार का तथा त्रस जीवों की विराधना की हो, सप्त व्यसन सेवन किये हों, सप्त भयों का अष्ट मूल गुणव्रत में अतिचार लगे हों, दस प्रकार का बहिरंग परिग्रह, चौदह प्रकार का अंतरंग परिग्रह रखा हो, पन्द्रह प्रमाद के वशीभूत होकर बारह व्रतों के पाँच-पाँच अतिचार इस प्रकार साठ अतिचारों में, पानी छानने में, जीवानी यथास्थान न पहुँचाने में, जो भी पाप लगाया हो यह सब मिथ्या होवे, मैं पश्चाताप करता हूँ।

हे भगवन ! मेरे रौद्र परिणाम दुश्चिन्तवन बोलने में, चलने में, हिलने में, सोने में करवट लेने में, मार्ग में ठहरने में, बिना देखे गमन करने में, मेरे मन-वचन-काय द्वारा जो पाप अन समझ से समझ से लगा हो वह सब पाप मिथ्या हो, मैं पश्चाताप करता हूँ।

हे भगवन् ! मैंने सूक्ष्म अथवा बादर कोई भी जीव पैर तले, करवट में बैठने-उठने, चलने-फिरने, झाड़ू लगाने में संरम्भ समारंभ आरम्भ के द्वारा रसोई व्यापार इत्यादि आरंभ में सताये हों, भयभीत किये हों, मरण को प्राप्त हुए हों, दुख को अनुभव करते हों, छेदन-भेदन को मन-वचन-काय द्वारा जाने अनजाने में दुख को प्राप्त हुए हों यह सब दोष मिथ्या हो, मैं पश्चाताप करता हूँ।

मैं सर्व जिनेन्द्रों की वन्दना करता हूँ, चौबीस जिन भूत-भविष्यत-वर्तमान, बीस तीर्थंकर, सिद्धक्षेत्र, कल्याणक क्षेत्र, सिद्ध क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्यालय की जिन मंदिरों की जिन चैत्यालयों की वंदना करता हूँ। मैंने सर्व मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका, 11 प्रतिमाओं में स्थित साधर्मी बन्धुओं की बिना समझे अनुभवी संसारी भव्य जीवों की जो निन्दा की हो, कटुक वचन कहे हों, आघात पहुँचाया हो, विनय न की हो तथा अन्य जीवों की निन्दा गर्हा की हो तो वह सब पाप मिथ्या हो, मैं पश्चाताप करता हूँ।

प्रभु मैंने निर्माल्य द्रव्य का उपयोग किया हो, सामायिक के बत्तीस प्रकार के दोष लगाये हों, जिनमंदिर में पाँच इन्द्रियों के विषय व मन के द्वारा, विषयों में प्रवृत्ति की हो, भगवत पूजन में जो प्रमाद किया हो, मैंने राग से द्वेष से मान से माया से खेल-तमाशे में, नाटक ग्रहों में, नृत्यगान आदि सभा सोसायटियों में, पिक्चर में गृहित अगृहित मिथ्यात्व द्वारा जो कर्म नोकर्म से संग्रहीत किये हों व जो भाव दूसरों के प्रति अहित के हुए हों वह सब मिथ्या हों मैं पश्चाताप करता हूँ।

मेरा समस्त जीवों के प्रति मैत्री भाव रहे, सब जीव मुझे क्षमा प्रदान करें, मेरा क्षमा भाव बनें, कर्मक्षय का उपाय प्रयत्न करूँ, मेरा समाधि मरण हों, चारों गतियों में मेरे भव निर्मल रहें, यही प्रार्थना है।

मुझे निरन्तर शास्त्राभ्यास की प्राप्ति हो, सज्जन समागम का लाभ मिले, दोषों के कहने में मौन रहूँ, अपने दोषों को त्यागने व प्रायश्चित्त के भाव हो, परोपकार, मिष्टवचन, प्रतिज्ञायों पर दृढ़ रहूँ चारों दान के भाव बनें, हे भगवन् ! जब तक मेरा भव भ्रमण न छूटे आपकी शान्त मुद्रा व आपके पादमूल में कर्मक्षय का प्रयास, अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति का लक्ष्य, आपके हितकारी वचन, वीतराग परिणति केवलज्ञान द्वारा आत्महित का मनन मुझे गति गति में प्राप्त हो यह अंतिम निवेदन है मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे, शीघ्र भव पार होऊँ। यही मेरी आपसे प्रार्थना है।

जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)

मूल रचयिता : आदर्श महाकवि श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे - ऽऽ
होनी-अनहोनी, हो-हो-२, कब क्या घट जाये रे ऽऽ
साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा-लेटा
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास न आयेगा बेटा
ख्वाबों में तू क्यों, हो-हो-२, आनन्द मनाये रे ऽऽ
अर्द्धमृतक समवृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न-सिकुड़न
गोदी में पोता-पोती, खोज रहा बचपन यौवन
बीते जीवन के, हो-हो-२ तू गीत सुनाये रे ऽऽ
हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी
बेटा बहू सोचें, हो हो-२ डोकरो कब मर जाये रे ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी-बेटा है
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है
भूखा प्यासा ही, हो-हो ऽ इक दिन मर जाये रे ऽऽ

जीवन बीता अरघट में, पुण्य-पाप की करवट में
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में
तेरा ही बेटा, हो-हो-२ तेरा कफन सजाये रे ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है
तेरा ही बेटा, हो-हो-२ तुझे आग लगाये रे ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गंवाता है
देहरी से बाहर, हो-हो २ वो साथ न जाये रे ऽऽ

कर तू प्रभु का ध्यान

रचियता : आदर्श महाकवि श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

कर तू प्रभु का ध्यान बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान-बाबा, निज घट में भगवान॥

काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जायेगा।
खोज रहा है जिसको तू वह, पल भर में मिल जायेगा।
खुद को तू पहिचान-बाबा खुद को तू पहिचान॥१॥

धन-वैभव यह महल-खजाना, कुछ भी साथ न जायेगा।
सुबह खिला जो फूल बाग में, सांझ समय मुरझायेगा।
कर ले धर्मध्यान, बाबा, कर ले धर्मध्यान॥२॥

कभी किसी का दिल दुःख जाये, ऐसे बोल कभी मत बोल।
घावों पर मल्हम बन जाये, ऐसे बोल बड़े अनमोल।
कहलाता यह ज्ञान, बाबा, कहलाता यह ज्ञान॥३॥

माता-पिता, बड़ों का आदर, धर्ममार्ग पर चलो सदा।
गुरुजन की नित सेवा करना, श्रावक का कर्तव्य कहा।
पाओगे सम्मान, बाबा पाओगे सम्मान।।४।।

हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह, चोरी यह मत पाप करो।
पाप विनाशक, धर्म प्रकाशक, णमोकार का जाप करो।
हो सम्यक् श्रद्धान, बाबा, हो सम्यक् श्रद्धान।।५।।

राग-द्वेष भावों के कारण, भवसागर में डूब रहा।
गँवा रहा भोगों में जीवन, मन फिर भी न ऊब रहा।
क्यों बनता नादान, बाबा क्यों बनता नादान।।६।।

जिसको अपना कहा आज तक, हुआ कभी ना वह अपना।
जिसकी खातिर जिया आज तक, निकला वह सुंदर सपना।।
क्यों तू करे गुमान, बाबा, क्यों तू करे गुमान।।७।।

मेंढक ने प्रभु ध्यान किया जब, मर कर देव हुआ तत्काल।
समवसरण में प्रभु को ध्याया, जीवन उसका हुआ निहाल।
मिट जाये अज्ञान, बाबा मिट जाये अज्ञान।।८।।

ऋण मुक्ति का वर दीजिये

रचियता : आदर्श महाकवि श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

गुरुदेव मेरे आप बस इतनी कृपा कर दीजिए।
कल्याण अपना कर सकूँ, वरदान इतना दीजिए॥

सोचूँ सदा अपना सुहित नहिं काम क्रोध विकार हो
हे नाथ ! गुरु आदेश का पालन सदा स्वीकार हो
सिर पर मेरे आशीष का शुभ हाथ प्रभु धर दीजिए। गुरुदेव.....

दृढ़ शील संयम व्रत धरूँ नित ब्रह्मचर्य लखूँ सदा
सीता सुदर्शन सम बनूँ निज आत्मसौख्य चखूँ सदा
माता सुता बहिना पिता दृष्टि विमल कर दीजिए। गुरुदेव.....

सच्चा समर्पण भाव हो नहिं स्वार्थ की दुर्गन्ध हो
विश्वासघात ना हम करें हर श्वांस में सौगंध हो
हे नाथ ! गुरु विश्वास की डोरी अमर कर दीजिए। गुरुदेव.....

जागे न मन में वासना मन में कषायैं न जगें
हो वात्सल्य हृदय सदा कर्त्तव्य से न कभी डिगें
गुरुभक्ति की सरिता बहे निर्मल हृदय कर दीजिए। गुरुदेव.....

भावों में निश्छलता रहे छल की रहे न भावना
गुरु पादमूल शरण मिले करते हैं हम नित कामना
जिनधर्म जिन आज्ञा सुगुरु सेवा का अवसर दीजिए। गुरुदेव.....

उपकार जो मुझ पर किये गुरुवर भुला न पायेंगे
जब तक है तन में श्वांस हम उपकार गुरु के गायेंगे
हम शिष्य हैं गुरु के ऋणी ऋणमुक्ति का वर दीजिए। गुरुदेव..

सम्यक्त्व ज्ञान चरित्र से सुरभित रहे मम साधना
आचार की मर्यादा ही हे नाथ ! हो आराधना
स्वर-स्वर समाधिभाव का चिंतन मुखर कर दीजिए। गुरुदेव...

एक सुखद अनुभूतियों का एहसास – माँ

(रचियता–आदर्श महाकवि श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज)

बेटा हो दुःख–पीड़ा में, माँ बन जाती दीवार।
माँ के प्यार सा इस दुनियाँ में नहीं किसी का प्यार
ओ–ऽ ऽ माँ, प्यारी माँ–ऽऽ–ऽ

माँ की गोदी में बेटा जब चैन से सोता है।
बेटा जैसा और किसी का पुण्य न होता है।
किलकारी भर भरकर माँ का करता है दीदार...
माँ के प्यार सा.....

बेटा जब–जब रोता है, माँ लोरी गाती है।
भूखी–प्यासी रहकर भी माँ, दूध पिलाती है।
चंदा–सूरज, अश्रु बहाते, पाने माँ का प्यार....
माँ के प्यार सा.....

कोठी–बँगला रुपया–पैसा, सब ऐशो–आराम।
माँ बिन सूना घर का आँगन, माँ को करो प्रणाम।
माँ ही घर की तुलसी है, रौनक, घर का शृंगार...
माँ के प्यार सा.....

जीवन–संगिनी पाकर माँ का प्यार भुलायेगा।
घर में दीवाली होगी पर खुशी न पायेगा।
माँ ही घर की दीवाली, होली, घर का त्यौहार...
माँ के प्यार सा.....

अपनी खुशियाँ कर न्यौछावर, देती है खुशियाँ।
बेटा समझे, न समझे, समझे न यह दुनियाँ।
माँ चलती काँटों पर, देती फूलों का उपहार...
माँ के प्यार सा.....

दुनिया छूट भी जाये, माँ का कभी न छूटे साथ।
माँ ने पकड़ा हाथ हमारा, पकड़ो माँ का हाथ।
सब तीरथ माँ चरणों में, बन जाओ श्रवण कुमार...
माँ के प्यार सा.....

राम, कृष्ण, महावीर ने माँ का मान बढ़ाया है।
जाँ देकर आजाद भगत ने, माँ को पाया है।
सदा चिरायु, सुखी रहो, भारत माँ करे पुकार...
माँ के प्यार सा.....

परिचय की पृष्ठभूमि पर
प.पू. भावलिंगी संत, आदर्श महाकवि
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

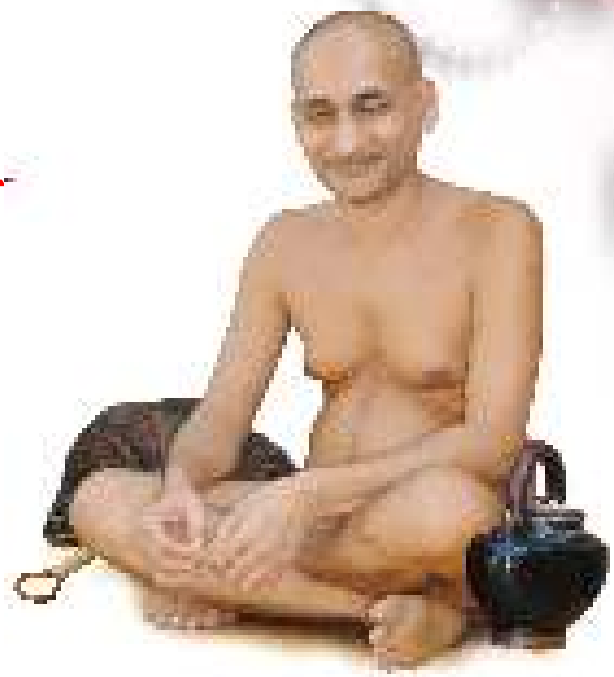

लौकिक यात्रा

पूर्व नाम	–	श्री राकेश कुमार जैन
पिता	–	श्री सनत कुमार जैन
माता	–	श्रीमती भगवती जैन
जन्म स्थान	–	जतारा, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	–	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	–	15 नवम्बर 1973, दिन – गुरुवार
शिक्षा	–	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	–	दो (अग्रज राजेश जैन, अनुज चक्रेश जैन)
भगिनि	–	दो – कमला, प्रियंका
विवाह	–	बाल ब्रह्मचारी
खेल	–	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता – दोनों खेल जिनसे सीखें उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)
सामाजिक सेवा	–	मंत्री – श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा

रुचि	–	अध्ययन, संगीत, पेंटिंग
सांस्कृतिक रुचि	–	अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करुणाभाव	–	बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को कभी-कभी घर वालों से नजर बचाकर पैसे दान देना।

परमार्थ यात्रा

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन के अवसर पर दर्शन हुये। आचार्यश्री की वात्सल्यता ने अत्यन्त प्रभावित किया। (सन्-1995, स्थान-मोराजी सागर, म.प्र.)

त्याग के संस्कार :

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की जतारा नगर में वैय्यावृत्ति के समय आजीवन आलू प्याज एवं रात्रि भोजन के त्याग से गृह त्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत :

आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज ससंघ का विहार कराते हुए सिद्धक्षेत्र श्री अहार जी में भगवान शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, सोमवार संवत् 2051, 27 फरवरी 1995 को आचार्यश्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा :

आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। स्थान-ललितपुर क्षेत्रपाल जी, 3 अगस्त सन्-1995, गुरुवार।

ऐलक दीक्षा :

फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, संवत् 2052, 23 फरवरी 1996 को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से ऐलक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया ऐलक विमर्शसागर जी।

मुनि दीक्षा :

पौष कृष्णा 11, संवत् 2055, सोमवार दिनांक 14 दिसम्बर 1998 को अतिशय क्षेत्र बरासो (भिण्ड) में आचार्यश्री विरागसागरजी से मुनि दीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित :

आचार्यश्री विरागसागरजी ने 13 फरवरी 2005 को कुन्थुगिरी गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर महाराज सहित 14 आचार्य एवं 200 पिच्छी के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार :

मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 2067 रविवार दिनांक 12 दिसम्बर 2010 को बांसवाड़ा राजस्थान में आचार्य श्री विरागसागर जी ने आचार्य पद के संस्कार किये और नाम दिया आचार्य विमर्शसागर जी।

साहित्य यात्रा

आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज यूँ तो शरीर से दुबले-पतले लेकिन गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुखमण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छूने वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

काव्य, प्रवचन, पाठ संग्रह :

1. हे वन्दनीय गुरुवर (काव्य)
2. गूँगी चीख (प्रवचन)
3. शंका की एक रात (प्रवचन)
4. मानतुंग के मोती

5. विमर्शाञ्जलि (पूजा पाठ संग्रह)
6. गीताञ्जलि (भजन)
7. विरागाञ्जलि (श्रमण पाठ संग्रह)
8. जीवन है पानी की बूँद (भाग 1)
9. जीवन है पानी की बूँद (भाग 2)
10. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)
11. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
12. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
13. समर्पण के स्वर (काव्य)
14. आईना (काव्य)
15. सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य)
16. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
17 वाह क्या खूब कही (काव्य)
18. कर लो गुरु गुणगान (काव्य)
19. आओ सीखें जिनस्तोत्र
20. जनवरी विमर्श
21. चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)
22. जैन श्रावक और दीपावली पर्व
23. भरत जी घर में वैरागी
24. शब्द शब्द अमृत

गज़ल संग्रह - ज़ाहिद की ग़ज़लें

विधान : 1. आचार्य विरागसागर विधान
श्री भक्तामर विधान
2. श्री कल्याण मंदिर विधान
श्री श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

चालीसा : गणधर चालीसा

टीका : योगसार प्राभृत (प्राकृत/हिन्दी)

लिपि : विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

पद्यानुवाद :

1. सुप्रभात स्तोत्र
2. महावीराष्टक स्तोत्र
3. लघु स्वयंभु स्तोत्र
4. भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद)

5. गोम्मटेस स्तुति
6. द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)
7. विषापहार स्तोत्र
8. एकीभाव स्तोत्र
9. पञ्चमहागुरुभक्ति
10. तीर्थंकर जिनस्तुति
11. गणधरवलय स्तोत्र
12. कल्याणमंदिर स्तोत्र
13. परमानंद स्तोत्र
14. रयणसार
15. इष्टोपदेश
16. ज्ञानांकुश स्तोत्र

बहुचर्चित भजन :

1. जीवन है पानी की बूँद
2. कर तू प्रभु का ध्यान
3. ऋण मुक्ति का वर दीजिये
4. शांतिनाथ कीर्तन
5. देश और धर्म के लिये जिओ
6. माँ

प्रेरणा से प्रकाशन :

1. सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागरजी, सम्पादक-मुनि विमर्शसागर जी)
2. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व का अनुशीलन (डॉ. लोकेश खरे)
3. समसामयिक - आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा)-2006
4. पुरुषार्थ सिद्धियुपाय - राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी)-2007
5. प्रज्ञाशील महामनीषी

प्रेरणा से स्थापित :

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला **उद्देश्य :** मूल जिनागम का संरक्षण प्रकाशन प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी धार्मिक नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

विद्वत् संगोष्ठी :

1. समसामयिक - आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा-2006)
2. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी-2007)
3. राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी - कर्म सिद्धांत (बड़ौत (उ.प्र.) 2014)
4. राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी - (बड़ा मलहरा (म.प्र.) 2016)
5. 'जीवन है पानी की बूँद' महाकाव्य पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (देवेन्द्रनगर, 2016)

संस्कार यात्रा

ऐतिहासिक पूजन प्रशिक्षण शिविर : आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित पूजन प्रशिक्षण शिविर एक ऐसी प्रयोगशाला है, जिसमें जैनधर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता। आचार्यश्री जब अपने मधुर कंठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि 4-5 घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारों से जुड़े हैं। अभी तक 19 पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं:-

1. महरौनी (उ.प्र.)
2. वरायठा (म.प्र.)
3. अंकुर कॉलोनी, सागर (म.प्र.)
4. सतना (म.प्र.)
5. अशोकनगर (म.प्र.)
6. रामगंजमण्डी (राज.)
7. भानपुरा (म.प्र.)
8. सिंगोली (म.प्र.)
9. कोटा (राज.)
10. शिवपुरी (म.प्र.)
11. आगरा (उ.प्र.)
12. एटा (उ.प्र.)

13. डूंगरपुर (राज.)
14. अशोकनगर (म.प्र.)
15. विजयनगर (राज.)
16. भिण्ड (म.प्र.)
17. बड़ौत (उ.प्र.)
18. टीकमगढ़ (म.प्र.)
19. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव :

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2002 (रजवांस-सागर, म.प्र.)
2. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2003 (महरौनी, ललितपुर, उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक रथ महोत्सव-2004 (बूँदी-राज.)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2007 (रामगंजमण्डी, राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक रथोत्सव-2007 (कोटा (राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2008 (शिवपुरी, म.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2009 (आगरा, उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2010 (एटा, उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक त्रय गजरथ महोत्सव-2012 (जतारा, म.प्र.)
10 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव-2013 (चंदेरी, म.प्र.)
11. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (पृथ्वीपुर, म.प्र.)
12. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (टीकमगढ़, म.प्र.)
13. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (वैरवार, म.प्र.)

चातुर्मास :

1.	मढ़ियाजी जबलपुर	–	1996
2.	भिण्ड (म.प्र.)	–	1997
3.	भिण्ड (म.प्र.)	–	1998
4.	भिण्ड (म.प्र.)	–	1999
5.	महरौनी (उ.प्र.)	–	2000
6.	अंकुर कॉलोनी (सागर)	–	2001
7.	सतना (म.प्र.)	–	2002
8.	अशोकनगर (म.प्र.)	–	2003
9.	रामगंजमण्डी (राज.)	–	2004
10.	सिंगोली (नीमच)	–	2005
11.	कोटा (राज.)	–	2006
12.	शिवपुरी (म.प्र.)	–	2007
13.	आगरा (उ.प्र.)	–	2008
14.	एटा (उ.प्र.)	–	2009
15.	डूंगरपुर (राज.)	–	2010
16.	अशोकनगर (म.प्र.)	–	2011
17.	विजयनगर (राज.)	–	2012

18. भिण्ड (म.प्र.) - 2013
19. बड़ौत (उ.प्र.) - 2014
20. टीकमगढ़ (म.प्र.) - 2015
21. देवेन्द्रनगर (म.प्र.) - 2016

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिनके पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्चा देखने-सुनने को मिलती हैं। कम-बोलना लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। प्रवचनों में सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी आचार्यश्री पंथ-संत-जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करने वाले **आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देने वाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी-अपनी आचार परम्परा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है।** आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री की अलग पहिचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणों में हम बारम्बार नमन करते हैं।

-श्रमण विचिन्त्यसागर (संघस्थ)

पूज्य गुरुदेव से संबंधित अन्य साहित्य

जीवनी साहित्य :

1. राष्ट्रयोगी : लेखक – श्री सुरेश 'सरल' जबलपुर (म.प्र.)
2. आँगन की तुलसी : लेखक – प्राचार्य श्री निहाल चन्द जैन, बीना (म.प्र.)
3. जतारा का ध्रुवतारा : लेखक – श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
4. भावलिंगी संत (महाकाव्य) : लेखक – श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
5. विमर्श धाम (महाकाव्य) : लेखक – पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
6. सर्वोदयी संत (महाकाव्य) : लेखक – श्री ज्ञानचन्द जैन 'दाऊ', सागर (म.प्र.)
7. विमर्श महाभाष्य : लेखक – पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
8. विमर्श वाटिका : लेखक – श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
9. विमर्श भक्ति शतक : लेखिका – श्रीमती स्मृति जैन 'भारत', अशोक नगर (म.प्र.)
10. विमर्श शतक 1, 2 : लेखक – पं. ब्रजेन्द्र जैन, देवेन्द्र नगर (म.प्र.)
11. विमर्श वंदना : लेखक – कवि शशिकर 'खटका', राजस्थानी, विजयनगर (राज.)

विधान :

1. आचार्य विमर्शसागर विधान : लेखक – श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
2. संकट मोचन तारणहारे–गुरु विमर्श विधान : लेखक – पं. संकेत जैन 'विवेक' देवेन्द्र नगर (म.प्र.)

स्मारिकायें :

1. विमर्श वारिधि (विजयनगर चातुर्मास 2012, स्मारिका)
2. विमर्श प्रवाह (बड़ौत चातुर्मास 2014, स्मारिका)
3. विमर्श गीतिका (टीकमगढ़ चातुर्मास 2015, स्मारिका)
4. विमर्शानुभूति (देवेन्द्रनगर चातुर्मास 2016 स्मारिका)

मासिक पत्रिका :

विमर्श प्रवाह (मासिक), प्रधान संपादक–डॉ. श्रेयांसकुमार जैन (बड़ौत), संपादिका–डॉ. अल्पना जैन (ग्वालियर), प्रबंध संपादक–डॉ. विश्वजीत जैन (आगरा), संपादक–पं. सर्वेश शास्त्री

छवि वीतरागी-प्यारी प्यारी लागे
दरश जो पाया-धन्य भाग जागे
चरणों करूँ नमन–नमन–नमन
जय हो, जय हो, जय हो,
जय हो-शांति भगवन्

अहार जी के बड़े बाबा

अहार जी के छोटे बाबा

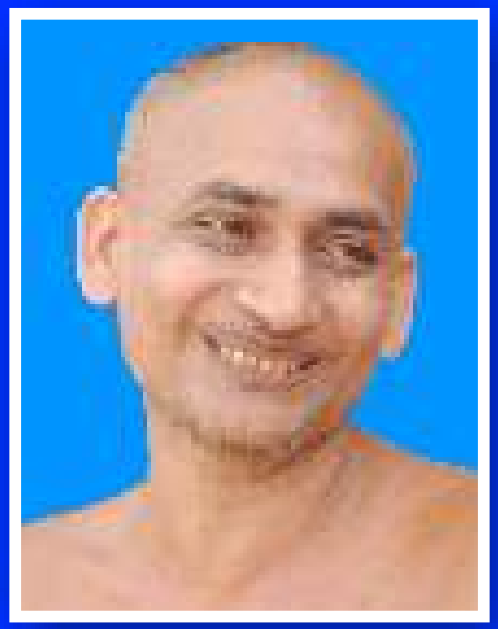

ऋजु भावदशा निज उर में है, ऋजुता का नेह निमंत्रण है
आतम प्रदेश के ठौर ठौर, हे गुरुवर! आमंत्रण है।
हरलो पीड़ायें आकर के, संकट मोचन तारण हारे।
दो चरण पर्श, गुरुवर विमर्श, नमिता का पथ हम स्वीकारें।